



Wuzu Ka Tariqa (Gujarati)

# વુઝુ કા તરીકા



શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નાત, બાનિયે દા'વતે ઇસ્લામી, હાજરતે અલલામા મૌલાના અબૂ રિવાલ

મુહમ્મદ ઈબ્ન્યાસ અતાર કાદિરી ર-ઝવી دامت برکاتہم  
السلامتہ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
مَا بَعُدَ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

### કિતાબ પઢને કી દુઆ

અઝ : શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, બાનિયે દા'વતે ઈસ્લામી, હઝરત અલ્લામા  
મૌલાના અબૂ બિલાલ મુહમ્મદ ઈલ્યાસ અત્તાર કાદિરી ર-ઝવી دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ  
દીની કિતાબ યા ઈસ્લામી સબક પઢને સે પહલે જૈલ મેં દી હુઈ દુઆ પઢ  
લીજિયે إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ જો કુઇ પઢેંગે યાદ રહેગા. દુઆ યેહ હૈ :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ  
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

તરજમા : ઐ અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ હમ પર ઈલ્મો હિક્મત કે દરવાઝે ખોલ દે ઔર હમ પર  
અપની રહમત નાઝિલ ફરમા ! ઐ અ-ઝમત ઔર બુઝુર્ગી વાલે ! دارالفکر بیروت  
નોટ : અવ્વલ આખિર એક એક બાર દુરૂદ શરીફ પઢ લીજિયે.

તાલિબે ગમે મદીના  
વ બકીઅ  
વ મગ્ફિરત  
13 શવ્વાલુલ મુકર્રમ 1428 હિ.



### વુઝૂ કા તરીકા

યેહ રિસાલા (વુઝૂ કા તરીકા)

શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, બાનિયે દા'વતે ઈસ્લામી હઝરત  
અલ્લામા મૌલાના અબૂ બિલાલ મુહમ્મદ ઈલ્યાસ અત્તાર કાદિરી ર-ઝવી ઝિયાઈ  
دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ ને ઉદ્દૂ ઝબાન મેં તહરીર ફરમાયા હૈ.

મજલિસે તરાજિમ (દા'વતે ઈસ્લામી) ને ઈસ રિસાલે કો ગુજરાતી રસ્મુલ  
ખત મેં તરતીબ દે કર પેશ કિયા હૈ ઔર મક-ત-બતુલ મદીના સે શાએઅ કરવાયા  
હૈ. ઈસ મેં અગર કિસી જગહ કમી બેશી પાએં તો મજલિસે તરાજિમ કો  
(બ ઝરીઅએ મક્તૂબ યા ઈ-મેઈલ SMS) મુત્તલઅ ફરમા કર સવાબ કમાઈયે.

રાબિતા : મજલિસે તરાજિમ (દા'વતે ઈસ્લામી)

મક-ત-બતુલ મદીના, સિલેક્ટેડ હાઉસ, અલિફ કી મસ્જિદ કે સામને,  
તીન દરવાઝા, અહમદઆબાદ-1, ગુજરાત

MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
 آمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

# वुजू का तरीका (उ-नई)

येह रिसाला अव्वल ता आभिर पूरा पढिये, कवी ईम्कान  
 हे के आप की कई ग-लतियां आप के सामने आ जाअें.

## दुइए शरीफ़ की इमीलत

सरकारे दौ आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले  
 मुह्तशम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने मुअज़्जम है : “जिस ने दिन  
 और रात में मेरी तरफ़ शौक व मडबबत की वजह से तीन तीन मर्तबा दुइदे पाक  
 पढा अदलाह عَزَّ وَجَلَّ पर डक है के वोह उस के उस दिन और उस रात के गुनाह  
 भुश दे.”

(الْمُعْجَمُ الْكَبِيرُ لِلطَّبْرَانِيِّ ج ١٨ ص ٣٦٢ حديث ٩٢٨)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

## उस्माने गनी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का घरके रसूल

डउरते सय्यिदुना उस्माने गनी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अेक बार अेक  
 मकाम पर पडोंय कर पानी मंगवाया और वुजू किया फिर यकायक  
 मुस्कुराने और रु-इका से इरमाने लगे : जानते हो मैं क्यूं मुस्कुराया ?

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर ओक बार दुइदे पाक पढा अल्लाह उस पर दस रहुमतें भेजता है. (स्म)

फ़िर जुद ही ईस सुवाल का जवाब देते हुअे इरमाया : मैं ने देखा सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने वुजू इरमाया था और भा'दे इरागत मुस्कुराअे थे और सहाबअे किराम الرضوان से इरमाया था : जानते हो मैं क्यूं मुस्कुराया ? फ़िर भीठे भीठे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने जुद ही इरमाया : "जब आदमी वुजू करता है तो येहरा धोने से येहरे के और हाथ धोने से हाथों के और सर का मस्ह करने से सर के और पाँउ धोने से पाँउ के गुनाह झउ जाते हैं." (मुस्निआम अमद बिन हनबल ج ۱ ص ۱۳۰ حدیث ۴۱۰)

वुजू कर के पन्दां हुअे शाहे उस्मां कडा : क्यूं तबस्सुम लला कर रहा हूँ ? जवाबे सुवाले मुभातब दिया फ़िर किसी की अदा को अदा कर रहा हूँ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! देखा आप ने ? सहाबअे किराम

الرضوان सरकारे भौरुल अनाम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की हर हर अदा और हर हर सुन्नत को दीवाना वार अपनाते थे. नीज ईस रिवायत से गुनाह धोने का नुस्खा भी मा'लूम हो गया. वुजू में कुल्ली करने से मुंह के, नाक में पानी डाल कर साफ़ करने से नाक के, येहरा धोने से पलकों समेत सारे येहरे के, हाथ धोने से हाथ के साथ साथ नाभुनों के नीचे के, सर (और कानों) का मस्ह करने से सर के साथ साथ कानों के और पाँउ धोने से पाँउ के साथ साथ पाँउ के नाभुनों के नीचे के गुनाह भी झउ जाते हैं.

ફરમાને મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ : જો શપ્સ મુઝ પર દુરૂદ પાક પઢના ભૂલ ગયા વોહ જન્મત કા રાસ્તા ભૂલ ગયા. (ખીરુન)

## ગુનાહ ઝડને કી હિકાયત

વુઝૂ કરને વાલે કે ગુનાહ ઝડતે હૈં, ઈસ ઝિમ્ન મેં એક ઈમાન અફરોઝ હિકાયત નક્લ કરતે હુએ હઝરતે અલ્લામા અબ્દુલ વહહાબ શા'રાની قَدَسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی ફરમાતે હૈં : એક મર્તબા સય્યિદુના ઈમામે આ'ઝમ અબૂ હનીફા رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ જામેઅ મસ્જિદ કૂફા કે વુઝૂખાને મેં તશરીફ લે ગએ તો એક નૌ જવાન કો વુઝૂ બનાતે હુએ દેખા, ઉસ સે વુઝૂ (મેં ઈસ્તિ'માલ શુદા પાની) કે કતરે ટપક રહે થે. આપ ને ઈશાદિ ફરમાયા : ઐ બેટે ! માં બાપ કી ના ફરમાની સે તૌબા કર લે. ઉસ ને ફૌરન અર્ઝ કી : મેં ને તૌબા કી. એક ઔર શપ્સ કે વુઝૂ (મેં ઈસ્તિ'માલ હોને વાલે પાની) કે કતરે ટપકતે દેખે, આપ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ને ઉસ શપ્સ સે ઈશાદિ ફરમાયા : ઐ મેરે ભાઈ ! તૂ ઝિના સે તૌબા કર લે. ઉસ ને અર્ઝ કી : મેં ને તૌબા કી. એક ઔર શપ્સ કે વુઝૂ કે કતરાત ટપકતે દેખે તો ઉસે ફરમાયા : શરાબ નોશી ઔર ગાને બાજે સુનને સે તૌબા કર લે. ઉસ ને અર્ઝ કી : મેં ને તૌબા કી. સય્યિદુના ઈમામે આ'ઝમ અબૂ હનીફા رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ પર કશ્ફ કે બાઈસ ચૂકે લોગોં કે ઉયૂબ ઝાહિર હો જાતે થે લિહાઝા આપ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ને બારગાહે ખુદા વન્દી عَزَّ وَجَلَّ મેં ઈસ કશ્ફ કે ખત્મ હો જાને કી દુઆ માંગી : અલ્લાહ عَزَّ وَجَلَّ ને દુઆ કબૂલ ફરમા લી જિસ સે આપ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ કો વુઝૂ કરને વાલોં કે ગુનાહ ઝડતે નઝર આના બન્દ હો ગએ.

(البيزات الكبرى ١ ج ص ١٣٠)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

ફરમાને मुस्तफ़ی صلی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्दे पाक न पड़ा तबकी वोह बढ भप्त हो गया. (उरु)

## वुजू का सवाब नहीं मिलेगा

आ'माल का दारो मदार निय्यतोँ पर है : अगर किसी अमल में अच्छी निय्यत न हो तो उस का सवाब नहीं मिलता. येही हाल वुजू का भी है, युनान्ये दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-भतुल मदीना की मत्बूआ 1250 सफ़हात पर मुशतमिल किताब, “बहारे शरीअत मुभर्रज्ज जिह्द अव्वल” सफ़हा 292 पर है : वुजू पर सवाब पाने के लिये हुकमे ईलाही बज्र लाने की निय्यत से वुजू करना जरूर है वरना वुजू हो जायेगा सवाब न पायेगा. आ'ला उजरत रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ उजरत इस्माते हैं : वुजू में निय्यत न करने की आदत से गुनहगार होगा, ईस में निय्यत सुन्नते मुअक़द है. (इतावा र-अविय्या मुभर्रज्ज, जि. 4, स. 616)

## सारा बदन पाक हो गया !

दो उदीसों का ખुલાसा है : जिस ने **بِسْمِ اللَّهِ** कह कर वुजू किया उस का सर से पाँउ तक सारा जिस्म पाक हो गया और जिस ने बिगैर **بِسْمِ اللَّهِ** कहे वुजू किया उस का उतना ही बदन पाक होगा जितने पर पानी गुजरा.

(سنن دارقطنی ج ۱ ص ۱۰۸-۱۰۹ حدیث ۲۲۸-۲۲۹)

उजरते सय्यिहुना अबू हुरैरा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** से रिवायत है के सरकारे मदीना, सुल्ताने बा करीना, करारे कलबो सीना, इँज गन्जना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाईसे नुजूले सकीना **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने ईशादि इस्माया : “ओ अबू हुरैरा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** जब तुम वुजू करो तो ईशादि इस्माया : “ओ अबू हुरैरा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** जब तक तुम्हारा वुजू बाकी रहेगा उस वक्त तक तुम्हारे इरिश्ते (या'नी किरामन कातिबीन) तुम्हारे लिये नेकियां लिखते रहेंगे.”

(الْمُعْجَمُ الصَّغِيرُ لِلطَّبْرَانِيِّ ج ۱ ص ۲۳ حدیث ۱۸۶)

﴿رَمَى بِمُؤْتَفِكِ﴾ : جَسَدِ الْمَرْءِ عَلَى الْمَاءِ وَالرَّغْمِ : जिसने ने मुज पर दस भरतभा सुब्द और दस भरतभा शाम दुइदे पाक पढा।  
 (उसे क्रियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी. (अत्रोह)

## भा वुजू सोने की इज़ीलत

इदीसे पाक में है : भा वुजू सोने वाला रोज़ा रभ कर एभादत करने वाले की तरह है.  
 (كَتَبُ الْقَمَالِ ج ٩ ص ١٢٣ حديث ٢٠٩٩٤)

## भा वुजू भरने वाला शहीद है

मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उजरते सय्यिदुना अनस रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से इरमाया : भेटा ! अगर तुम हमेशा भा वुजू रहने की इस्तिताअत रभो तो अैसा डी करो क्यूंके म-लकुल मौत जिस भन्दे की इह डालते वुजू में कब्ज करता है उस के लिये शहादत लिभ डी ज़ाती है. (شُعْبَةُ الْإِيمَانِ ج ٣ ص ٢٩ حديث ٢٧٨٣) मेरे आका आ'ला उजरत एमाम अहमद रज़ा भान رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ इरमाते हैं : हमेशा भा वुजू रहना मुस्तडभ है.

## मुसीबतों से हिफ़ात का नुस्खा

अद्लाड عَزَّ وَجَلَّ ने उजरते सय्यिदुना मूसा कलीमुद्लाड عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام से इरमाया : “अै मूसा ! अगर बे वुजू डोने की सूरत में तुजे कोई मुसीबत पडोये तो भुद अपने आप को मलामत करना.” (شُعْبَةُ الْإِيمَانِ ج ٣ ص ٢٩ رقم ٢٧٨٢) “इतावा र-उविय्या” में है : हमेशा भा वुजू रहना इस्लाम की सुन्नत है. (इतावा र-उविय्या मुभर्रज, जि. 1, स. 702)

## “अहमद रज़ा” के सात हुइइ की निरभत से

### हर वक्त भा वुजू रहने के सात इमाधल

मेरे आका एमामे अडले सुन्नत एमाम अहमद रज़ा भान رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की. (महारज़ान)

इरमाते हैं : बा'ज आरिफ़ीन (رَحْمَهُمُ اللهُ الْمُبِين) ने इरमाया : जो उमेशा बा वुजू रहे अल्लाह तआला उस को सात फ़ज़ीलतों से मुशरफ़ इरमाये :  
 ﴿1﴾ मलाअेका उस की सोहबत में रज्बत करें ﴿2﴾ कलम उस की नेकियां लिखता रहे ﴿3﴾ उस के आ'ज़ा तस्बीह करें ﴿4﴾ उस से तकबीरे उला फ़ौत न हो ﴿5﴾ जब सोअे अल्लाह तआला कुछ़ इरिशते त्मेजे के जिन्नो ईन्स के शर से उस की डिफ़ायत करें ﴿6﴾ सकराते मौत उस पर आसान हो ﴿7﴾ जब तक बा वुजू हो अमाने ठलाही में रहे.

(अैज़न, स. 702, 703)

### दुगना सवाब

यकीनन सर्दी, थकन या नज़ला, जुकाम, दर्द सर और बीमारी में वुजू करना दुश्वार होता है मगर फिर भी कोई जैसे वक्त वुजू करे जब के वुजू करना दुश्वार हो तो उस को ब हुकमे हदीस दुगना सवाब मिलेगा.

(الْمُعْجَمُ الْأَوْسَطُ لِلطَّبْرَانِيِّ ج ٤ ص ١٠٦ حدیث ٥٣٦٦)

### सर्दी में वुजू करने की हिफ़ायत

उज़रते उस्माने गनी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपने गुलाम, हुमरान से वुजू के लिये पानी मांगा और सर्दी की रात में बाहर जाना याहते थे हुमरान कहते हैं : मैं पानी लाया, उन्हों ने मुंह हाथ धोअे तो मैं ने कहा : अल्लाह आप को किफ़ायत करे रात तो बहुत ठन्डी है. ईस पर इरमाया के : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से सुना है के “जो बन्दा वुजूअे कामिल करता है अल्लाह तआला उस के अगले पिछले गुनाह बप्श देता है.”

(مسند بزار ج ٢ ص ٧٥ حدیث ٤٢٢)

(अहारे शरीअत, जि. 1, स. 285)



करमाने मुस्तक। عَلَى اللَّهِ تَعَالَى غَيْرُ اللَّهِ وَسَلَّمَ : जो मुँह पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढेगा में कियामत के दिन उस की शक़ाअत कड़ेगा. (क़ुरआन)

## वुजू का तरीका (ह-नई)

का'बतुल्लाह शरीफ़ की तरफ़ मुँह कर के ठीकी जगह बैठना मुस्तहब है. वुजू के लिये नित्यत करना सुन्नत है, नित्यत न हो तब भी वुजू हो ज़ाअगा मगर सवाब नहीं मिलेगा. नित्यत दिल् के धरद के को कहते हैं, दिल् में नित्यत होते हुअे ज़बान से भी कह लेना अज़्जल है लिहाज़ा ज़बान से इस तरह नित्यत कीजिये के मैं हुकुमे ँलाही بِسْمِ اللَّهِ क़ह लीजिये के येह भी सुन्नत है. बल्के وَالْحَمْدُ لِلَّهِ क़ह लीजिये के जब तक बा वुजू रहेंगे क़िरिश्ते नेकियां लिपते रहेंगे.<sup>1</sup> अब दोनों हाथ तीन तीन बार पछोंयों तक धोँये, (नल बन्द कर के) दोनों हाथों की उँगलियों का पिलाल भी कीजिये. कम अज़ कम तीन तीन बार दाअें बाअें उपर नीचे के दांतों में भिस्वाक कीजिये और हर बार भिस्वाक को धो लीजिये. हुज्जतुल ँस्लाम हज़रते सय्यिदुना ँमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद गज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي क़रमाते हैं : “भिस्वाक करते वक्त नमाज़ में कुरआने मज्जद की क़िराअत और जिकुल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के लिये मुँह पाक करने की नित्यत करनी चाहिये.”<sup>2</sup> अब सीधे हाथ के तीन युल्लू पानी से (हर बार नल बन्द कर के) इस तरह तीन कुद्लियां कीजिये के हर बार मुँह के हर पुर्जे पर (हल्क के कनारे तक) पानी बह जाअे, अगर रोज़ा न हो तो गर-गरा भी कर लीजिये. क़िर सीधे ही हाथ के तीन युल्लू (अब हर बार आधा युल्लू पानी काई है) से (हर बार नल बन्द कर के) तीन बार नाक में नर्म गोशत तक पानी यढाँये और अगर रोज़ा न हो तो नाक की जउ तक पानी पछोंयाँये, अब (नल

करमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه و آله و سلم: मुज़ पर दुइटे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तदारत है. (अबुल-)

बन्द कर के) उलटे हाथ से नाक साफ़ कर लीजिये और छोटी उंगली नाक के सूराभों में डालिये. तीन बार सारा येहरा इस तरह धोईये के जहां से आदतन सर के बाल उगना शुरूअ होते हैं वहां से ले कर ठोड़ी के नीचे तक और अेक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक हर जगह पानी बह जाओ. अगर दाढी है और अेहराम बांधे हुअे नहीं हैं तो (नल बन्द करने के बाद) इस तरह बिलाल कीजिये के उंगलियों को गले की तरफ़ से दाबिल कर के सामने की तरफ़ निकालिये फिर पहले सीधा हाथ उंगलियों के सिरे से धोना शुरूअ कर के कोहनियों समेत तीन बार धोईये. इसी तरह फिर उलटा हाथ धो लीजिये. दोनों हाथ आधे आजू तक धोना मुस्तहब है. अक्सर लोग युद्लू में पानी ले कर पड़ोये से तीन बार छोड देते हैं के कोहनी तक बहता यला जाता है इस तरह करने से कोहनी और कलाई की करवटों पर पानी न पड़ोयने का अन्देशा है लिहाजा बयान कर्दा तरीके पर हाथ धोईये. अब युद्लू भर कर कोहनी तक पानी बहाने की हाजत नहीं बल्के (बिगैर एजाजते सहीदा अैसा करना) येह पानी का इसराफ़ है. अब (नल बन्द कर के) सर का मस्ह इस तरह कीजिये के दोनों अंगूठों और कलिमे की उंगलियों को छोड कर दोनों हाथ की तीन तीन उंगलियों के सिरे अेक दूसरे से मिला लीजिये और पेशानी के बाल या भाल पर रभ कर भीयते हुअे गुद्दी तक इस तरह ले जाईये के हथेलियां सर से जुदा रहें, फिर गुद्दी से हथेलियां भीयते हुअे पेशानी तक ले आईये,<sup>1</sup> कलिमे की उंगलियां और अंगूठे इस दौरान सर पर बिल्कुल मस नहीं होंने

1 : सर पर मस्ह का अेक तरीका येह भी तहरीर है इस में बिल खुसूस ईस्लामी बहनों के लिये ज़ियादा आसानी है युनान्चे लिखा है : मस्हे सर में अदाअे सुन्नत को येह भी कर्नी है के उंगलियां सर के अगले हिस्से पर रभे और हथेलियां सर की करवटों पर और हाथ जमा कर गुद्दी तक भीयता ले जाओ. (इतावा र-जविय्या मुभर्रजा, जि. 4, स. 621)

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : تُمَّ جَلَا بِي لَو مِوَجَّزٍ فَرَدُّهُ فَوَدَّ كَ تَمَّحَارَا فَرَدُّهُ مِوَجَّزٍ تَكَّ  
 پڄڙي ٿا هُ. (طريق)

याहिएं, फिर कलिमे की उंगलियों से कानों की अन्दरूनी सत्ह का और अंगूठों से कानों की बाहरी सत्ह का मस्ह कीजिये और छुंगलियां (या'नी छोटी उंगलियां) कानों के सूराभों में दाबिल कीजिये और उंगलियों की पुश्त से गरदन के पिछले हिस्से का मस्ह कीजिये. भा'ज लोग गले का और धुले हुअे हाथों की कोहनियों और कलाईयों का मस्ह करते हैं येह सुन्नत नहीं है. सर का मस्ह करने से कबल टोंटी अथी तरह बन्द करने की आदत बना लीजिये बिला वजह नल भुला छोड देना या अधूरा बन्द करना, के पानी टपक कर जाअेअ होता रहे ईसराफ व गुनाह है. पडले सीधा फिर उलटा पाँउ हर बार उंगलियों से शुद्ध कर के टप्नों के उपर तक बढके मुस्तहब है के आधी पिंडली तक तीन तीन बार धो लीजिये. दोनों पाँउ की उंगलियों का भिलाव करना सुन्नत है. (भिलाव के दौरान नल बन्द रभिये) ईस का मुस्तहब तरीका येह है के उलटे हाथ की छुंगलिया से सीधे पाँउ की छुंगलिया का भिलाव शुद्ध कर के अंगूठे पर अत्म कीजिये और उलटे ही हाथ की छुंगलिया से उलटे पाँउ के अंगूठे से शुद्ध कर के छुंगलिया पर अत्म कर लीजिये. (आम्मअे कुतुब)

दुज्जतुल ईस्लाम हजरते सय्यिहुना ईमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद गजाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي ફરમાते હેં : हर उजूव धोते वक्त येह उम्मीद करता रहे के मेरे ईस उजूव के गुनाह निकल रहे हें.  
 (أحياء العلوم ج ١ ص ١٨٣ مُلَخَّصًا)

## वुजू के बये हुअे पानी में 70 बीमारियों से शिफा

लोटे वगैरा से वुजू करने के भा'द बया हुवा पानी ખડે હો કર પીને મેં શિફા હૈ યુનાન્યે મેરે આકા આ'લા હઝરત, ઈમામે અહલે સુન્નત, મૌલાના શાહ ઈમામ અહમદ રજા ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن “ફતાવા

इरमाने मुस्तका صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुज पर दस भरतभा दुरेद पाक पढा अल्लाह उस पर सो रहुमतें नाजिल करमाता है. (ط. ۱)

र-अविय्या” मुभर्रजा जिल्द 4 सफ़हा 575 ता 576 पर इरमाते हैं :  
 अकिय्या अे वुजू (या’नी वुजू के अये हुअे पानी) के लिये शरअन अ-अ-मतो  
 अेअताराम है और नभी صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से साअित, के हुजूर ने  
 वुजू इरमा कर अकिय्या आअ (या’नी अये हुअे पानी) को अडे डो कर नोश  
 इरमाया और अेक हदीस में रिवायत किया गया के ईस का पीना सत्तर  
 भरअ से शिफ़ा है. तो वोअ ईन उमूर में आअे अमअम से मुशा-अहत  
 रअता है अैसे पानी से ईस्तिअा मुनासिअ नहीं. “तन्वीर” के आदाअे  
 वुजू में है : “वुजू के आ’द वुजू का पसमान्दा (या’नी अया हुवा पानी)  
 किअला रुअ अडे डो कर पिये.” अल्लामा अअदुल गनी नाअुलुसी  
 رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ इरमाते हैं : मैं ने तजरिआ किया है के जब मैं बीमार  
 डोता हूँ तो वुजू के अकिय्या पानी से शिफ़ा आसिल डो जाती है. नअिये  
 सादिक صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ईस सडीअ तिअे न-अवी में पाअे जाने  
 वाले ईशदि गिरामी पर अे’तिमाद करते हुअे मैं ने येअ तरीका ईअ्तियार  
 किया है.

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

**जन्त के आठों दरवाअे अुल अते हैं**

हदीसे पाक में है : जिस ने अअी तरअ वुजू किया और इर  
 आस्मान की तरफ़ निगाअ उठाई और कलिअ अे शआदत पढा उस के  
 लिये जन्त के आठों दरवाअे अुल दिये अते हैं जिस से याअे अन्दर  
 दाअिल डो.

(سُنَنِ دَارِمِ ج ۱ ص ۱۹۶ حدیث ۷۱۶)

**नजर कभी कमअोर न डे**

अे वुजू के आ’द आस्मान की तरफ़ देख कर सूरअे اِنَّا اَنْزَلْنٰهُ  
 पढ लिया करे اِن شَاءَ اللہُ عَزَّوَجَلَّ उस की नजर कभी कमअोर न डेगी.

(मसाईलुल कुरआन, स. 291)

કરમાને મુસ્તફા : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुर्रद शरीफ़ न पढे तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख्स है. (ज़िब्रिया)

## વુઝૂ કે બા'દ ત્રીન બાર સૂરએ કદ્ર પઢને કે ફઝાઇલ

હદીસે મુબારક મેં હૈ : જો વુઝૂ કે બા'દ એક મર્તબા સૂ-રતુલ કદ્ર પઢે તો વોહ સિદ્દીકીન મેં સે હૈ ઓર જો દો મર્તબા પઢે તો શુ-હદા મેં શુમાર ક્રિયા જાએ ઓર જો ત્રીન મર્તબા પઢેગા તો અલ્લાહ عزَّ وَّجَلَّ મૈદાને મહશર મેં ઉસે અપને અમ્બિયા કે સાથ રખેગા.

(کُنُزُ الْفُتَال ج ۹ ص ۱۳۲ رقم ۸۰-۲۶، الحاوی للفتاوی السیوطی ج ۱ ص ۴۰۲)

## વુઝૂ કે બા'દ પઢને કી દુઆ (અવ્વલ વ આખિર દુરુદ શરીફ)

જો વુઝૂ કરને કે બા'દ યેહ કલિમાત પઢે :

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ تરજમા : ઐ અલ્લાહ ! તૂ પાક હૈ ઓર તેરે લિયે  
أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ، હી તમામ ખૂબિયાં હૈં મેં ગવાહી દેતા હું કે તેરે  
أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ- સિવા કોઈ મા'બૂદ નહીં, મેં તુજ સે બખ્શિશ ચાહતા  
હું ઓર તેરી બારગાહ મેં તૌબા કરતા હું.

તો ઉસ પર મોહર લગા કર અર્શ કે નીચે રખ દિયા જાએગા ઓર ક્રિયામત કે દિન ઉસ પઢને વાલે કો દે દિયા જાએગા. (شُعَبُ الْإِيمَان ج ۳ ص ۲۱ رقم ۲۷۰۴)

## વુઝૂ કે બા'દ યેહ દુઆ બી પઢ લીજિયે (અવ્વલ વ આખિર દુરુદ શરીફ)

اللَّهُمَّ اجْعَلْنِي مِنَ التَّوَابِينَ تરજમા : ઐ અલ્લાહ ! મુઝે કસરત  
وَاجْعَلْنِي مِنَ الْمُنْتَظَرِينَ- સે તૌબા કરને વાલોં મેં બના દે ઓર મુઝે  
(ترمذی ج ۱ ص ۱۲۱ حدیث ۵۰)

પાકીઝા રહને વાલોં મેં શામિલ કર દે.

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

इरमाने मुस्तङ्ग। عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक पाक आलूद हो जिस के पास मेरा ठिक हो और वोह  
मुज पर हुइदे पाक न पढे. (म)

## लङ्ग “अल्लाह” के यार हुइइ की निस्बत से वुजू के यार इराधत

❁ येहरा धोना ❁ कोहनियों समेत दोनों हाथ धोना ❁ यौथाई  
सर का मसू करना ❁ टप्नों समेत दोनों पाँउ धोना.

(عَالَمِ الْغَيْبِ ج (ص ६८), अहारे शरीअत, जि. 1, स. 288)

### धोने की ता'रीफ़

किसी उज्व धोने के येह मा'ना हैं के उस उज्व के हर हिस्से पर  
कम अज कम दो कतरे पानी बह जाये. सिई लीग जाने या पानी को  
तेल की तरह युपउ लेने या अेक कतरा बह जाने को धोना नहीं कहेंगे न  
ईस तरह वुजू या गुस्ल अदा होगा.

(इतावा र-अविय्या मुअर्रजा, जि. 1, स. 218, अहारे शरीअत, जि. 1, स. 288)

## “करम या रब्बल आ-लमीन” के यौदह हुइइ की निस्बत से वुजू की 14 सुन्नतें

“वुजू का तरीका” (उ-नई) में आ'ज सुन्नतों और मुस्तहब्बत  
का बयान हो युका है ईस की मजीद वजाहत मुला-हजा इरमाईये :

❁ निथ्यत करना ❁ بِسْمِ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ अगरे वुजू से कबल  
कह लें तो जब तक आ वुजू रहेंगे इरिशते नेकियां लिअते रहेंगे ❁ दोनों  
हाथ पड़ोंयों तक तीन बार धोना ❁ तीन बार भिस्वाक करना ❁ तीन  
युल्लू से तीन बार कुल्ली करना ❁ रोजा न हो तो गर-गरा करना  
❁ तीन युल्लू से तीन बार नाक में पानी यढाना ❁ दाढी हो तो  
(अहराम में न होने की सूरत में) उस का खिलाल करना ❁ हाथ और

करमाने मुस्तफ़ा على الله تعالى عليه وسلم : जिस ने मुज पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुइडे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (क्रमाल)

✽ पाँउ की उँग्लियों का ज़िलाव करना ✽ पूरे सर का अेक ही बार मस्ह करना ✽ कानों का मस्ह करना ✽ इराँउ में तरतीब काँठम रचना (या'नी इर्र आ'जा में पहले मुँह फिर हाथ कोहनियों समेत धोना, फिर सर का मस्ह करना और फिर पाँउ धोना) और ✽ पै दर पै वुजू करना या'नी अेक उजूव सूखने न पाअे, के दूसरा उजूव धो लेना.

(बहारे शरीअत, जि. 1, स. 293, 294 मुलज्जसिन)

## “या रसूलव्वाह तेरे दर की इआओं को सलाम” के उन्तीस हुइइ की निस्बत से वुजू के 29 मुस्तहब्बात

✽ डिब्बा इ ✽ उँची जगह ✽ बैठना ✽ पानी बहाते वक्त आ'जा पर हाथ डेरना ✽ इत्मीनान से वुजू करना ✽ आ'जाअे वुजू पर पहले पानी युपउ लेना जुसूसन सदिियों में ✽ वुजू करने में बिगैर जइरत किसी से मदद न लेना ✽ सीधे हाथ से कुल्ली करना ✽ सीधे हाथ से नाक में पानी यढाना ✽ उलटे हाथ से नाक साइ करना ✽ उलटे हाथ की छुँग्लिया नाक में डालना ✽ उँग्लियों की पुशत से गरदन की पुशत का मस्ह करना ✽ कानों का मस्ह करते वक्त लीगी हुँ छुँग्लिया (या'नी छोटी उँग्लियां) कानों के सूराभों में दाजिल करना ✽ अंगूठी को ह-र-कत देना जब के ढीली हो और येह यकीन हो के इस के नीचे पानी बह गया है, अगर सप्त हो तो ह-र-कत दे कर अंगूठी के नीचे पानी बहाना इर्र है ✽ मा'जूरे शर-ई (इस के तइसीवी अहकाम इसी रिसाले के सइहा 32 ता 35 पर मुला-हजा इरमा लीजिये) न हो तो नमाज का वक्त शुइअ

करमाने मुस्तफ़ی صلی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ وسلم : मुजू पर दुरुद शरीफ़ पढो अल्लाह عزوجل तुम पर रहमत भेजेगा. (अबुसूर)

होने से पहले ही वुजू कर लेना ❀ जो कामिल तौर पर वुजू करता है या'नी जिस की कोई जगह पानी बहने से न रह जाती हो उस का कूओं (या'नी नाक की तरफ़ आंभों के दानों कोने) टप्नों, अंडियों, तल्वों, कूंयों (या'नी अंडियों के ठीपर मोटे पकड़े) घाईयों (या'नी उंग्लियों के दरमियान वाली जगहों) और कोहनियों का भुसूसिख्यत के साथ भयाल रहना और बे भयाली करने वालों के लिये तो इर्ज़ है के इन जगहों का भास भयाल रभे के अकसर देभा गया है के येह जगहें भुशक रह जाती हैं और येह बे भयाली ही का नतीजा है औसी बे भयाली हुराम है और भयाल रहना इर्ज़ ❀ वुजू का लोटा उलटी तरफ़ रभिये अगर तशत या पतीली वगैरा से वुजू करें तो सीधी जानिब रभिये ❀ येहरा धोते वक्त पेशानी पर इस तरह डैला कर पानी डालना के ठीपर का कुछ छिस्सा भी धुल जाअे ❀ येहरे और ❀ हाथ पाँउ की रोशनी वसीअ करना या'नी जितनी जगह पानी बहाना इर्ज़ है उस के अतराफ़ में कुछ बढाना म-सलन हाथ कोहनी से ठीपर आधे भाजू तक और पाँउ टप्नों से ठीपर आधी पिंडली तक धोना ❀ दानों हाथों से मुंड धोना ❀ हाथ पाँउ धोने में उंग्लियों से शुडूअ करना ❀ हर उजूव धोने के आ'द उस पर हाथ डैर कर भूँदें टपका देना ताके बदन या कपडे पर न टपके भुसूसन जब के मस्जिद में जाना हो, के इर्शे मस्जिद पर वुजू के पानी के कतरे गिराना मकडूहे तहरीमी है ❀ हर उजूव के धोते वक्त और मस्ह करते वक्त निख्यते वुजू का हाजिर रहना ❀ ईब्लिदा में ﷻ के साथ साथ दुरुद शरीफ़ और कलिमअे शहादत पढ लेना ❀ आ'जाअे वुजू भिला जडूरत



﴿فَرْمَانَهُ مُسْتَكْفًا﴾ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर कसरत से दुरुदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुरुदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मङ्गिरत है. (मौजे)

न पोंछिये अगर पोंछना हो तब भी बिला ज़रूरत बिल्कुल पुशक न कीजिये कुछ तरी बाकी रभिये के बरोजे कियामत नेकियों के पलडे में रभी जाओगी ❀ वुजू के बा'द हाथ न जटकें के शैतान का पंभा है ❀ बा'दे वुजू मियानी (या'नी पाजमे का वोड हिस्सा जो पेशाब गाल के करीब होता है) पर पानी छिउकना. (पानी छिउकते वक्त मियानी को कुरते के दामन में छुपाओ रभना मुनासिब है नीज वुजू करते वक्त भी बल्के हर वक्त परदे में पर्दा करते हुओ मियानी को कुरते के दामन या थादर वगैरा के जरीओ छुपाओ रभना हया के करीब है) ❀ अगर मक़रुह वक्त न हो तो दो रक़अत नफ़ल अदा करना जिसे तहिय्यतुल वुजू कहते हैं. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 293, 300)

## “काश ! कामिल वुजू नसीब हो” के सोलह दुरुद की निस्बत से वुजू के 16 मक़रुहत

❀ वुजू के लिये नापाक जगह पर बैठना ❀ नापाक जगह वुजू का पानी गिराना ❀ आ'जाओ वुजू से लोटे वगैरा में कतरे टपकाना (मुंह धोते वक्त लरे हुओ युल्लू में उमूमन येहरे से पानी के कतरे गिरते हैं इस का ખयाल रभिये) ❀ किन्ले की तरफ़ थूक या बलगम डालना या कुल्ली करना ❀ बे ज़रूरत दुन्या की बात करना ❀ ज़ियादा पानी ખर्य करना (सदरुशशरीअह मुफ़ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي) बहारे शरीअत मुਖर्रज जिल्द अक्वल सफ़हा 302 ता 303 पर इरमाते हैं : नाक में पानी डालते वक्त आधा युल्लू काफ़ी है तो अब पूरा युल्लू लेना इसराफ़ है) ❀ एतना कम पानी ખर्य करना के सुन्नत अदा न हो (टोंटी न एतनी ज़ियादा ખोलें के पानी हाजत से ज़ियादा गिरे न एतनी कम ખोलें के सुन्नत भी

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुज़ पर अक दुइद शरीफ़ पढता है अल्लाह उस के लिये अक कीरात अज्र लिखता है और कीरात उलुद पढाउ जितना है. (ज़िज़्ज़ा)

अदा न हो बल्के मु-तवस्सित हो) ❀ मुंह पर पानी मारना ❀ मुंह पर पानी डालते वक्त झूंकना ❀ अक हाथ से मुंह धोना के रिफ़ाउ व हुनूद का शिआर है ❀ गले का मस्ह करना ❀ उलटे हाथ से कुल्ली करना या नाक में पानी यढाना ❀ सीधे हाथ से नाक साफ़ करना ❀ तीन जदीद पानियों से तीन बार सर का मस्ह करना ❀ धूप के गर्म पानी से वुजू करना ❀ डोंट या आंभें जोर से बन्द करना और अगर कुछ सूषा रह गया तो वुजू ही न होगा. वुजू की हर सुन्नत का तर्क मक़रूह है ईसी तरह हर मक़रूह का तर्क सुन्नत. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 300, 301)

### धूप के गर्म पानी की वज़ाहत

सदरुशशरीअह, बहररुतरीकह उज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'उमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ बहारे शरीअत मुभर्रज़ा जिल्द अक्वल सफ़हा 301 के हाशिये पर लिखते हैं : “जो पानी धूप से गर्म हो गया उस से वुजू करना मुत्लकन मक़रूह नहीं बल्के इस में यन्द कुयूद हैं, जिन का ज़िक़ पानी के बाब में आयेगा और इस से वुजू की कराहत तन्ज़ीही है तहरीमी नहीं.” पानी के बाब में सफ़हा 334 पर लिखते हैं : “जो पानी गर्म मुल्क में गर्म मौसिम में सोने यांटी के सिवा किसी और धात के बरतन में धूप में गर्म हो गया, तो जब तक गर्म है उस से वुजू और गुस्ल न खाहिये, न उस को पीना खाहिये बल्के बदन को किसी तरह पछोयना न खाहिये, यहां तक के अगर उस से कपडा लीग जाये तो जब तक ठन्डा न हो ले उस के पहनने से बयें के उस पानी के इस्ति'माल में अन्देशअे

ફરમાને मुस्तका عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: जिस ने किताब में मुज पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरशते उस के लिये ईस्तिस्कार करते रहेंगे. (ज. 1)

भरस (या'नी बदन पर सफ़ेद दाग का अन्देशा) है, फिर भी अगर वुजू या गुस्ल कर लिया तो हो जायेगा.” (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 301, 334)

### मुस्ता'मल पानी का अहम मसअला

अगर बे वुजू शप्स का हाथ या उंगली का पोरु या नाभुन या बदन का कोई टुकड़ा जो वुजू में धोया जाता हो ज़ान बूज़ कर या त्बूल कर दह दर दह (10x10) से कम पानी (म-सलन पानी से बरी हुँ बावटी या लोटे वगैरा) में पड जाये तो पानी मुस्ता'मल (या'नी ईस्ति'माल शुदा) हो गया और अब वुजू और गुस्ल के लाईक न रहा. ईसी तरह जिस पर गुस्ल फ़र्ज़ हो उस के जिस्म का कोई बे धुला हुवा हिस्सा पानी से धू जाये तो वोह पानी वुजू और गुस्ल के काम का न रहा. हां अगर धुला हाथ या धुले हुये बदन का कोई हिस्सा पड जाये तो हरज नहीं. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 333) (मुस्ता'मल पानी और वुजू व गुस्ल के तफ़सीली अहकाम सीअने के लिये बहारे शरीअत हिस्सा 2 का मुता-लआ इरमाईये)

### मिट्टी मिले पानी से वुजू होगा या नहीं

❁ पानी में रैत कीयड मिल जाये तो जब तक रकीक (या'नी पानी पतला) रहे उस से वुजू जाईज है. अकूल (आ'ला उररत رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ) इरमाते हैं: “में कहता हूँ”) मगर बिला उररत कीयड मिले हुये (पानी) से वुजू करना मन्अ है, के मुस्ला या'नी सूरत बिगाडना है और येह शर-अन हराम है (इतावा र-अविय्या मुबररज़, जि. 4, स. 650) (मा'लूम हुवा मुंह पर ईस तरह मिट्टी मलना के सूरत बिगड जाये या मुंह काला करना जैसा

ફરમાને मुस्तફा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर अेक बार दुइडे पाक पढा अदलाह उस पर दस रइभते बेजता है. (مسلم)

के बा'ज अवकात योर का कोअेले वगैरा से मुंड काला कर देते हैं येह हराम है कस्दन काफ़िर का भी मुस्ला करना या'नी येहरा बिगाडना जाँठज नहीं) ❁ जिस पानी में कोई बढबूदार चीज मिल जाअे उस से वुजू मक़ूह है पुसूसन अगर उस की बढबू नमाज में बाकी रहे, के (ईस से नमाज) मक़ूहे तहरीमी होगी. (अैज्ज, स. 650)

### पान पाने वाले मु-तवज्जेह हों

भेरे आका आ'ला हजरत, ईमामे अहले सुन्नत, वलिये ने'मत, अजीमुल अ-र-कत, अजीमुल मर्तबत, परवानअे शम्अे रिसालत, मुजद्धिदे दीनो मिल्लत, डामिये सुन्नत, माडिये बिद्अत, आलिमे शरीअत, पीरे तरीकत, बाईसे भैरो अ-र-कत, हजरते अद्लामा मौलाना अलडाज अल डाफ़िज अल कारी शाह ईमाम अहमद रजा पान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फरमाते हैं : पानों के कसरत से आदी पुसूसन जब के दांतों में फ़जा (गेप) हो तजरिबे से जानते हैं छालिया के बारीक रेजे और पान के बहुत छोटे छोटे टुकडे ईस तरह मुंड के अतराफ़ व अकनाफ़ में जा गीर होते हैं (या'नी मुंड के कोनों और दांतों के पांयों में घुस जाते हैं) के तीन बल्के कभी दस बारह कुद्लियां भी उन के तस्फ़ियअे ताम (या'नी मुकम्मल सज़ाई) को काफ़ी नहीं होतीं, न पिलाल उन्हें निकाल सकता है न मिस्वाक, सिवा कुद्लियों के, के पानी मनाफ़िज (या'नी सूराभों) में दाभिल होता और जुम्बिशें देने (या'नी हिलाने) से जभे हुअे बारीक ज़रों को अ तदरीज छुडा छुडा कर लाता है, ईस की भी कोई तहदीद (हद बन्दी) नहीं हो सकती और येह कामिल तस्फ़िया (या'नी मुकम्मल सज़ाई) भी बहुत

ફરમાને મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : જો શપ્સ મુઝ પર દુરૂદ પાક પઢના ભૂલ ગયા વોહ જન્નત કા રાસ્તા ભૂલ ગયા. (طبرانی)

મુઅક્કદ (યા'ની ઈસ કી સપ્ત તાકીદ) હૈ મુ-તઅદદ અહાદીસ મેં ઈશાદિ હુવા હૈ કે : “જબ બન્દા નમાઝ કો ખડા હોતા હૈ ફિરિશતા ઉસ કે મુંહ પર અપના મુંહ રખતા હૈ યેહ જો પઢતા હૈ ઈસ કે મુંહ સે નિકલ કર ફિરિશ્તે કે મુંહ મેં જાતા હૈ ઉસ વક્ત અગર ખાને કી કોઈ શૈ ઉસ કે દાંતોં મેં હોતી હૈ મલાએકા કો ઉસ સે ઐસી સપ્ત ઈઝા હોતી હૈ કે ઔર શૈ સે નહીં હોતી.”

હુઝૂરે અકરમ, નૂરે મુજસ્સમ, શાહે બની આદમ, રસૂલે મુહૂતશમ صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ને ફરમાયા : જબ તુમ મેં સે કોઈ રાત કો નમાઝ કે લિયે ખડા હો તો યાહિયે કે મિસ્વાક કર લે ક્યૂંકે જબ વોહ અપની નમાઝ મેં કિરાઅત કરતા હૈ તો ફિરિશતા અપના મુંહ ઈસ કે મુંહ પર રખ લેતા હૈ ઔર જો ચીઝ ઈસ કે મુંહ સે નિકલતી હૈ વોહ ફિરિશ્તે કે મુંહ મેં દાખિલ હો જાતી હૈ.<sup>1</sup> ઔર “ત-બરાની ને કબીર” મેં હઝરતે સય્યિદુના અબૂ અય્યૂબ અન્સારી رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ સે રિવાયત કી હૈ કે દોનોં ફિરિશ્તોં પર ઈસ સે ઝિયાદા કોઈ ચીઝ ગિરાં નહીં કે વોહ અપને સાથી કો નમાઝ પઢતા દેખેં ઔર ઉસ કે દાંતોં મેં ખાને કે રેઝેં ઈંસે હોં.

(الْمُعْجَمُ الْكَبِيرُ ج ٤ ص ١٧٧ حدیث ٤٠٦١, इतावा र-उविख्या मुपर्ज, जि. 1, स. 624, 625)

## तसव्वुह क़ा अमीम म-दनी नुस्खा

હુજજતુલ ઈસ્લામ હઝરતે સય્યિદુના ઈમામ અબૂ હામિદ મુહમ્મદ બિન મુહમ્મદ બિન મુહમ્મદ ગઝાલી عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي ફરમાતે હૈં : વુઝૂ સે ફરાગત કે બા'દ જબ આપ નમાઝ કી તરફ મુ-તવજજેહ હોં ઉસ વક્ત યેહ તસવ્વુર કીજિયે કે જિન ઝાહિરી આ'ઝા પર લોગોં કી

﴿فَرَمَانَهُ مُسْتَقْبِلَ حَيْثُ مَلَأَ يَدَايَهُ مَاءً﴾ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरुह पाक न पढा तबकीक वोह बढ अप्त हो गया. (उंन)

नजर पडती है वोह तो ब आहिर ताहिर (या'नी पाक) हो चुके मगर हिल को पाक किये बिगैर बारगाहे एलाही عَزَّوَجَلَّ में मुनाज्जत करना हया के खिलाफ है क्यूंके अस्लाह عَزَّوَجَلَّ हिलों को भी देखने वाला है. मजीह इरमाते हैं : आहिरि वुजू कर लेने वाले को येह बात याद रखनी चाहिये के हिल की तहारत (या'नी सफ़ाई) तौबा करने और गुनाहों को छोडने और उम्हा अप्लाक अपनाने से होती है. जो शप्स हिल को गुनाहों की आलू-दगियों से पाक नहीं करता इकत आहिरि तहारत (या'नी सफ़ाई) और जैबो जीनत पर इक्तिफ़ा करता है उस की मिसाल उस शप्स की सी है जो बादशाह को मद्दुि करता है और अपने घर को बाहर से भूब यमकाता है और रंगो रोगन करता है मगर मकान के अन्दरनी हिस्से की सफ़ाई पर कोई तवज्जोह नहीं देता. अब ऐसी सूरत में जब बादशाह उस के मकान के अन्दर आ कर गन्दगियां देभेगा तो वोह नाराज होगा या राजी येह दर जी शुगिर भुद समज सकता है.

(حَيَاةُ الْغُلُومِ ج ١ ص ١٨٥ مَلْخُصًا)

**“सफ़ा कर” के पांच हुर्रफ़ की निस्बत से**

**अधम वगैरा से भून निकलने के 5 अहकाम**

❁ भून, पीप या जर्द पानी कहीं से निकल कर बहा और उस के बहने में ऐसी जगह पड़ोयने की सलाहियत थी जिस जगह का वुजू या गुस्ल में धोना इर्ज़ है तो वुजू जाता रहा. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 304)

❁ भून अगर यमका या उभरा और बहा नहीं जैसे सूई की नोक या याकू का कनारा लग जाता है और भून उभर या यमक जाता है या

करमाने मुस्तका عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर ओक बार दुइदे पाक पढा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है. (स्म)

भिलाल किया या मिस्वाक की या उंगली से दांत मांजे या दांत से कोई चीज म-सलन सेभ वगैरा काटा उस पर भून का असर जाहिर हुवा या नाक में उंगली डाली इस पर भून की सुर्भी आ गई मगर वोह भून बहने के काबिल न था वुजू नहीं टूटा. (अैज्ज) ❁ अगर बहा मगर बह कर औसी जगह नहीं आया जिस का गुस्ल या वुजू में धोना इर्ज हो म-सलन आंभ में दाना था और टूट कर अन्दर ही डैल गया बाहर नहीं निकला या पीप या भून कान के सूराभों के अन्दर ही रहा बाहर न निकला तो इन सूरतों में वुजू न टूटा (अैज्ज, स. 27) ❁ जम्म बेशक बडा है रतूबत यमक रही है मगर जब तक बहेगी नहीं वुजू नहीं टूटेगा. (अैज्ज) ❁ जम्म का भून बार बार पोंछते रहे, के बहने की नौबत न आई तो गौर कर लीजिये के अगर इतना भून पोंछ लिया है के अगर न पोंछते तो बह जाता तो वुजू टूट गया, नहीं तो नहीं. (अैज्ज)

### सर्दी से आ'जा इट जअें तो.....

सर्दी वगैरा से आ'जा इट गअे धो सके धोअे, ठन्डा पानी नुक्सान करे तो गर्म पानी अगर कर सकता हो करना वाजिब, अगर गर्म से भी नुक्सान हो तो मस्ह करे, अगर मस्ह भी नुक्सान दे तो उस पर जे पट्टी बंधी या दवा का जिमाद (या'नी लेप) है उस पर पानी बहाअे, येह भी जरर (या'नी नुक्सान) दे तो उस पट्टी या जिमाद (या'नी लेप, PESTE) पूरे पर मस्ह करे इस से (भी) नुक्सान हो तो छोड दे, मुआइ है. (इतावा र-अविय्या मुभर्रज, जि. 4, स. 620)

ફરમાને મુસ્તકા : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : જો શપ્સ મુઝ પર દુરુદે પાક પઢના ભૂલ ગયા વોહ જન્નત કા રાસ્તા ભૂલ ગયા. (ખિર્રા)

## વુઝૂ મેં મેહંદી ઓર સુરમે કા મસ્થલા

✽ ઓરત કે હાથ પાઉં પર મેહંદી કા જિર્મ લગા રહ ગયા ઓર ખબર ન હુઈ તો વુઝૂ વ ગુસ્લ હો જાએગા. હાં જબ ઇતિલાઅ હો છુડા કર વહાં પાની બહા દે. (ફતાવા ર-ઝવિયા મુખર્રજા, જિ. 4, સ. 613)

✽ સુરમા આંખ કે કૂએ (યા'ની આંખ કે કોને) યા પલક મેં રહ ગયા ઓર ઇતિલાઅ ન હુઈ ઝાહિરન હરજ નહીં ઓર બા'દે નમાઝ કૂએ (આંખ કે કોને) મેં મહસૂસ હુવા તો અસ્લન બાક (યા'ની બિલ્કુલ અન્દેશા) નહીં. (મતલબ યેહ કે નમાઝ હો ગઈ) (એઝન)

## ઇન્જેક્શન લગાને સે વુઝૂ ટૂટેગા યા નહીં ?

✽ ગોશત મેં ઇન્જેક્શન લગાને મેં સિર્ફ ઇસી સૂરત મેં વુઝૂ ટૂટેગા જબ કે બહને કી મિકદાર મેં ખૂન નિકલે ✽ જબ કે નસ કા ઇન્જેક્શન લગા કર પહલે ખૂન ઊપર કી તરફ ખીંચતે હૈં જો કે બહને કી મિકદાર મેં હોતા હૈ લિહાઝા વુઝૂ ટૂટ જાતા હૈ ✽ ઇસી તરહ ગ્લૂકોઝ વગૈરા કી ડ્રિપ નસ મેં લગવાને સે વુઝૂ ટૂટ જાએગા ક્યૂંકે બહને કી મિકદાર મેં ખૂન નિકલ કર નલકી મેં આ જાતા હૈ. હાં બહને કી મિકદાર મેં ખૂન નલકી મેં ન આએ તો વુઝૂ નહીં ટૂટેગા ✽ સિરિંજ કે ઝરીએ ટેસ્ટ કરને કે લિયે ખૂન નિકાલને સે વુઝૂ ટૂટ જાતા હૈ ક્યૂંકે યેહ બહને કી મિકદાર મેં હોતા હૈ ઇસી લિયે યેહ ખૂન પેશાબ કી તરહ નાપાક ભી હોતા હૈ, ખૂન સે ભરી હુઈ શીશી જેબ મેં રખ કર નમાઝ પઢી, ન હુઈ નીઝ ખૂન યા પેશાબ કી શીશી અગર્યે અચ્છી તરહ બન્દ હો મસ્જિદ કે અન્દર ભી નહીં લા સકતે, લાએંગે તો ગુનહગાર હોંગે.



करमाने मुस्तफ़اً صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढा तलक़ी वोल बढ भप्त हो गया. (हदीस)

## दुपती आंभ के आंसू

☉ आंभ की बीमारी के सबभ जो आंसू बहा वोह नापाक है और वुजू भी तोड देगा. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 310) अफ़सोस ! अकसर लोग इस मस्अले से ना वाकिफ़ होते हैं और दुपती आंभ से ब वजहे मरज़ बहने वाले आंसू को और आंसूओं की मानिन्द समज़ कर आस्तीन या कुरते के दामन वगैरा से पोंछ कर कपडे नापाक कर डालते हैं

☉ नाबीना की आंभ से जो रतूबत ब वजहे मरज़ निकलती है वोह नापाक है और इस से वुजू भी टूट जाता है.

(माभूज़ अज़ बहारे शरीअत, जि. 1, स. 306)

## पाक और नापाक रतूबत

☉ जो रतूबत इन्सानी बदन से निकले और वुजू न तोडे वोह नापाक नहीं. म-सलन भून या पीप बह कर न निकले या थोडी के, के मुंह भर न हो पाक है. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 309)

## छाला और कुडिया

☉ छाला नोय डाला अगर उस का पानी बह गया तो वुजू टूट गया वरना नहीं. (अज़न, स. 305) ☉ कुडिया बिडकुल अस्थी हो गइ उस की मुर्दा भाल बाकी है जिस में उपर मुंह और अन्दर भला है अगर उस में पानी भर गया और दबा कर निकाला तो न वुजू ज़अे न वोह पानी नापाक. हां अगर उस के अन्दर कुछ तरी भून वगैरा की बाकी है तो वुजू भी ज़ता रहेगा और वोह पानी भी नापाक है. (इतावा र-ज़विय्या मुभर्रज़, जि. 1, स. 355, 356) ☉ पारिश या कुडियों में अगर बहने वाली रतूबत न हो सिर्फ़ यिपक हो और कपडा उस से बार

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस भरतभा सुब्ह और दस भरतभा शाम दुइदुइ पाक पढा, उसे क्रियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी. (अल-मुत्ताबा)

બાર છૂ કર ચાહે કિતના હી સન જાએ પાક હૈ. (બહારે શરીઅત, જિ. 1, સ. 310) ❁ નાક સાફ કી ઉસ મેં સે જમા હુવા ખૂન નિકલા વુઝૂ ન ટૂટા, અન્સબ (યા'ની ઝિયાદા મુનાસિબ) યેહ હૈ કે વુઝૂ કરે.

(ફતાવા ૨-અવિચ્યા મુખર્રજા, જિ. 1, સ. 281)

## કૈ સે વુઝૂ કબ ટૂટતા હૈ ?

❁ મુંહ ભર કૈ ખાને, પાની યા સફરા (યા'ની પીલે રંગ કા કડવા પાની) કી વુઝૂ તોડ દેતી હૈ. જો કૈ તકલ્લુફ કે બિગૈર ન રોકી જા સકે ઉસે મુંહ ભર કહતે હૈં. મુંહ ભર કૈ પેશાબ કી તરહ નાપાક હોતી હૈ ઈસ કે છીંટોં સે અપને કપડે ઓર બદન કો બચાના ઝરૂરી હૈ.

(માખૂઝ અઝ બહારે શરીઅત, જિ. 1, સ. 306, 390 વગૈરા)

## હંસને કે અહકામ

❁1❁ રુકૂઅ વ સુજૂદ વાલી નમાઝ મેં બાલિગ ને કહ્કહા લગા દિયા યા'ની ઈતની આવાઝ સે હંસા કે આસ પાસ વાલોં ને સુના તો વુઝૂ ભી ગયા ઓર નમાઝ ભી ગઈ, અગર ઈતની આવાઝ સે હંસા કે સિર્ફ ખુદ સુના તો નમાઝ ગઈ વુઝૂ બાકી હૈ, મુસ્કુરાને સે ન નમાઝ જાએગી ન વુઝૂ. મુસ્કુરાને મેં આવાઝ બિલકુલ નહીં હોતી સિર્ફ દાંત ઝાહિર હોતે હૈં (ત્રાફી અલ્લાહ ૧૬) ❁2❁ બાલિગ ને નમાઝે જનાઝા મેં કહ્કહા લગાયા તો નમાઝ ટૂટ ગઈ વુઝૂ બાકી હૈ. (અય્ઝા) ❁3❁ નમાઝ કે ઈલાવા કહ્કહા લગાને સે વુઝૂ નહીં જાતા મગર દોબારા કર લેના મુસ્તહબ હૈ. (ત્રાફી અલ્લાહ ૧૦) હમારે મીઠે મીઠે આકા صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ને કભી ભી કહ્કહા નહીં લગાયા લિહાઝા હમેં ભી કોશિશ કરની ચાહિયે કે યેહ સુન્નાત ભી ઝિન્દા હો ઓર હમ ઝોર ઝોર સે ન હંસેં. ફરમાને

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की. (عبدالرزاق)

मुस्तफ़ा يَا 'नी الْقَهْقَهَةُ مِنَ الشَّيْطَانِ وَالتَّبَسُّمُ مِنَ اللّٰهِ تَعَالَى : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ कड़कड़ा शैतान की तरफ़ से है और मुस्कुराना अद्लाह وَحَلَّ وَحَلَّ की तरफ़ से है.

(الْمَغْزَمُ الصَّغِيرُ لِلطَّبْرَانِيِّ ج ٢ ص ١٠٤)

### क्या सत्र टपने से वुजू टूट जाता है ?

अवाम में मशहूर है के घुटना या सत्र फुलने या अपना या पराया सत्र टपने से वुजू टूट जाता है येह बिदकुल गलत है. हां वुजू के आदाब से है के नाफ़ से ले कर दोनों घुटनों समेत सब सत्र छुपा हो बल्के इस्तिन्जा के भा'द झौरन ही छुपा लेना याहिये के बिगैर ज़रत सत्र फुला रहना मन्अ और दूसरों के सामने सत्र फोलना हराम है.

(बहारे शरीअत, जि. 1, स. 309)

### गुस्ल का वुजू काड़ी है

गुस्ल के लिये जो वुजू किया था वोही काड़ी है ज्वाह बरहना नहायें. अब गुस्ल के भा'द दोबारा वुजू करना ज़रूरी नहीं बल्के अगर वुजू न भी किया हो तो गुस्ल कर लेने से आ'जाअे वुजू पर भी पानी बह जाता है लिहाजा वुजू भी हो गया, कपडे तब्दील करने से भी वुजू नहीं जाता.

### थूक में पून

﴿1﴾ मुंह से पून निकला अगर थूक पर गालिब है तो वुजू टूट जायेगा वरना नहीं, ग-लबे की शनाप्त येह है के अगर थूक का रंग सुर्भ हो जाये तो पून गालिब समजा जायेगा और वुजू टूट जायेगा येह सुर्भ थूक नापाक भी है. अगर थूक जर्द (या'नी पीला) हो तो पून पर थूक गालिब माना जायेगा लिहाजा न वुजू टूटेगा न येह जर्द थूक नापाक.

(बहारे शरीअत, जि. 1, स. 305)

﴿۲﴾ इरमाने मुस्तकी صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : जो मुज पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ पढेगा में कियामत के दिन उस की शकामत कड़ेगा. (अत्रामाल)

﴿2﴾ मुंह से ँतना पून निकला के थूक सुर्ष ढो गया और लोटे या गिलास से मुंह लगा कर कुल्ली के लिये पानी लिया तो लोटा गिलास और कुल पानी नजिस ढो गया लिहाजा जैसे भौकअ पर युल्लू में पानी ले कर अहतियात से कुल्ली कीजिये और ये ल भी अहतियात इरमांये के छींटे उड कर आप के कपडों वगैरा पर न पडें.

### वुजू में शक आने के 5 अहकाम

✽ अगर दौराने वुजू किसी उज्व के धोने में शक वाकेअ ढो और अगर ये ल जिन्दगी का पडला वाकिआ है तो ँस को धो लीजिये और अगर अक्सर शक पडा करता है तो ँस की तरफ तवज्जोह न दीजिये. ँसी तरह अगर बा'दे वुजू भी शक पडे तो ँस का कुछ भयाल मत कीजिये. (अहारे शरीअत, जि. 1, स. 310) ✽ आप भा वुजू थे अब शक आने लगा के पता नही वुजू है या नही, ऐसी सूरत में आप भा वुजू हें क्यूंके सिर्फ शक से वुजू नही टूटता. (अज्ज, स. 311) ✽ वस्वसे की सूरत में अहतियातन वुजू करना अहतियात नही ँत्तिआअे शैतान है (अज्ज) ✽ यकीनन आप उस वक्त तक भा वुजू हें जब तक वुजू टूटने का ऐसा यकीन न ढो जाअे के कसम भा सकें ✽ कों उज्व धोने से रह गया है मगर ये ल याद नही कौन सा उज्व था तो आयां (या'नी उलटा) पाउ धो लीजिये. (दुर्मुख्तार ج 1 ص 310)

### सोने से वुजू टूटने न टूटने का बयान

नींद से वुजू टूटने की दो शर्ते हें : ﴿1﴾ दोनों सुरीन अख्शी तरह जमे हुअे न ढों ﴿2﴾ ऐसी ढालत पर सोया जो गाडिल ढो कर सोने में रुकावट न ढो. जब दोनों शर्ते जम्अ ढों या'नी सुरीन भी अख्शी तरह

કરમાને મુસ્તફા ﷺ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْوَسْمُ : મુઝ પર દુરૂદે પાક કી કસરત કરો બેશક યેહ તુમ્હારે લિયે તહારત હૈ. (પૃ. ૧૩)

જમે હુએ ન હોં નીઝ ઐસી હાલત મેં સોયા હો જો ગાફિલ હો કર સોને મેં રુકાવટ ન હો તો ઐસી નીંદ સે વુઝૂ ટૂટ જાતા હૈ. અગર એક શર્ત પાઈ જાએ ઔર દૂસરી ન પાઈ જાએ તો વુઝૂ નહીં ટૂટેગા.

સોને કે વોહ દસ અન્દાઝ જિન સે વુઝૂ નહીં ટૂટતા : ﴿1﴾ ઈસ તરહ બૈઠના કે દોનોં સુરીન ઝમીન પર હોં ઔર દોનોં પાઉ એક તરફ ફૈલાએ હોં. (કુરસી, રેલ ઔર બસ કી સીટ પર બૈઠને કા ભી યેહી હુકમ હૈ) ﴿2﴾ ઈસ તરહ બૈઠના કે દોનોં સુરીન ઝમીન પર હોં ઔર પિંડલિયોં કો દોનોં હાથોં કે હલ્કે મેં લે લે ખ્વાહ હાથ ઝમીન વગૈરા પર યા સર ઘુટનોં પર રખ લે ﴿3﴾ ચાર ઝાનૂ યા'ની પાલતી (ચોકડી) માર કર બૈઠે ખ્વાહ ઝમીન યા તખ્ત યા ચારપાઈ વગૈરા પર હો ﴿4﴾ દો ઝાનૂ સીધા બૈઠા હો ﴿5﴾ ઘોડે યા ખચ્ચર વગૈરા પર ઝીન રખ કર સુવાર હો ﴿6﴾ નંગી પીઠ પર સુવાર હો મગર જાનવર ચઢાઈ પર ચઢ રહા હો યા રાસ્તા હમવાર હો ﴿7﴾ તક્યે સે ટેક લગા કર ઈસ તરહ બૈઠા હો કે સુરીન જમે હુએ હોં અગર્યે તક્યા હટાને સે યેહ ગિર પડે ﴿8﴾ ખડા હો ﴿9﴾ રુકૂઅ કી હાલત મેં હો ﴿10﴾ સુન્નત કે મુતાબિક જિસ તરહ મર્દ સજદા કરતા હૈ ઈસ તરહ સજદા કરે કે પેટ રાનોં ઔર બાઝૂ પહલૂઓં સે જુદા હોં મઝકૂરા સૂરતેં નમાઝ મેં વાકેઅ હોં યા ઈલાવા નમાઝ, વુઝૂ નહીં ટૂટેગા ઔર નમાઝ ભી ફાસિદ ન હોગી અગર્યે કસ્દન સોએ, અલબત્તા જો રુક્ન બિલ્કુલ સોતે હુએ અદા કિયા ઉસ કા ઈઆદા (યા'ની દોબારા અદા કરના) ઝરૂરી હૈ ઔર જાગતે હુએ શુરૂઅ કિયા ફિર નીંદ આ ગઈ તો જો હિસ્સા જાગતે અદા કિયા વોહ અદા હો ગયા બકિયા અદા કરના હોગા.

સોને કે વોહ દસ અન્દાઝ જિન સે વુઝૂ ટૂટ જાતા હૈ : ﴿1﴾ ઉકડું

કરમાને મુસ્તફા عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : تُمْ جَدًا بَلَى لَوْ مِثْلَ مَا عَلَى رَأْسِكَ مِنْ مَاءٍ لَمْ يَكُنْ يَكْفِيكَ (مُرَان)

યા'ની પાઉં કે તલ્વોં કે બલ ઈસ તરહ બૈઠા હો કે દોનોં ઘુટને ખરે રહેં  
 ﴿2﴾ ચિત યા'ની પીઠ કે બલ લૈટા હો ﴿3﴾ પટ યા'ની પેટ કે બલ લૈટા હો  
 ﴿4﴾ ઘાઈ યા બાઈ કરવટ લૈટા હો ﴿5﴾ એક કોહની પર ટેક લગા કર સો  
 જાએ ﴿6﴾ બૈઠ કર ઈસ તરહ સોયા કે એક કરવટ ઝુકા હો જિસ કી વજહ સે  
 એક યા દોનોં સુરીન ઉઠે હુએ હોં ﴿7﴾ નંગી પીઠ પર સુવાર હો ઔર  
 જાનવર પસ્તી (યા'ની નિયાન) કી જાનિબ ઉતર રહા હો ﴿8﴾ પેટ રાનોં પર  
 રખ કર દો ઝાનૂ ઈસ તરહ બૈઠે સોયા કે દોનોં સુરીન જમે ન રહેં ﴿9﴾ ચાર  
 ઝાનૂ યા'ની ચોકડી માર કર ઈસ તરહ બૈઠે કે સર રાનોં યા પિંડલિયોં પર  
 રખા હો ﴿10﴾ જિસ તરહ ઔરત સજદા કરતી હૈ ઈસ તરહ સજદે કે  
 અન્દાઝ પર સોયા કે પેટ રાનોં ઔર બાઝૂ પહલૂઓં સે મિલે હુએ હોં યા  
 કલાઈયાં બિઘી હુઈ હોં. મઝકૂરા સૂરતેં નમાઝ મેં વાકેઅ હોં યા નમાઝ કે  
 ઈલાવા વુઝૂ ટૂટ જાએગા. ફિર અગર ઈન સૂરતોં મેં કસ્દન સોયા તો  
 નમાઝ ફાસિદ હો ગઈ ઔર બિલા કસ્દ સોયા તો વુઝૂ ટૂટ જાએગા મગર  
 નમાઝ બાકી હૈ. બા'દે વુઝૂ (મખ્સૂસ શરાઈત કે સાથ) બકિયા નમાઝ ઉસી  
 જગહ સે પઢ સકતા હૈ જહાં નીંદ આઈ થી. શરાઈત ન મા'લૂમ હોં તો નએ  
 સિરે સે પઢ લે. (માખૂઝ અઝ ફતાવા ૨-ઝવિયા મુખર્રજા, જિ. 1, સ. 365 તા 367)

**વુઝૂએ અમ્બિયાએ કિરામ عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ ઔર નીંદ મુબારક**

અમ્બિયા عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ કા વુઝૂ સોને સે નહીં જાતા. ફાએદા :  
 અમ્બિયા عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ કી આંખેં સોતી હેં દિલ કભી નહીં સોતા  
 ❀ બા'ઝ નવાકિઝે વુઝૂ (યા'ની બા'ઝ વુઝૂ તોડને વાલી ચીઝેં) અમ્બિયા  
 عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ કે લિયે યું નાકિઝે વુઝૂ (વુઝૂ ટૂટને કા સબબ) નહીં, કે ઈન  
 કા વુકૂઅ (યા'ની વાકેઅ હોના) હી ઉન સે મુહાલ (યા'ની ના મુઝ્કિન) હૈ

करमाने मुस्तका صلى الله تعالى عليهم و آله وسلم : जिस ने मुज पर दस भरतभा दुइदे पाक पढा अल्लाह उस पर सो  
रहमते नाजिल करमाता है. (प्रां.)

जैसे जुनून (या'नी पागल पन) या नमाज में कड़कड़ा गशी (या'नी बेडोशी) भी अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के जिस्मे जाहिर पर तारी हो सकती है, दिल् मुबारक ईस हालत में भी बेदार व ખબरदार रहता.

(इतावा र-अविय्या मुभर्रज, जि. 4, स. 740)

## मसाजिद के वुजूबाने

मिस्वाक करने से बा'ज अवकात दांतों में भून आ जाता है और थूक भी सुर्ष होने की वजह से नापाक हो जाता है मगर अफ्सोस, के अहतियात नहीं की जाती. मसाजिद के वुजूबाने भी अक्सर कम गहरे होते हैं जिस की वजह से सुर्ष थूक वाली कुल्ली के छीटे कपड़ों या बदन पर पडते हैं, नीज घर के हम्माम के पुप्ता इर्श पर वुजू करते वक्त ईस से भी जियादा छीटे पडते हैं.

## घर में वुजूबाना बनवाघये

आज कल बेसीन (हाथ धोने की कूंडी) पर ञडे ञडे वुजू करने का रवाज है जो के भिलाई मुस्तहब है. अफ्सोस ! लोग असाईशों त्परी बडी बडी कोठियां तो बनाते हैं मगर ईस में वुजूबाना नहीं बनवाते ! सुन्नतों का दई रहने वाले ईस्लामी त्प्राईयों की भिदमतों में म-दनी इत्तिजा है के हो सके तो अपने मकान में कम अज कम अक टोंटी का वुजूबाना जइर बनवाईये. ईस में येह अहतियात जइर रहिये के टोंटी की धार बराहे रास्त इर्श पर गिरने के बजाअे ढलवान पर गिरे वरना दांतों में भून वगैरा आने की सूरत में बदन या लिबास पर छीटे उडने का मस्अला रहेगा अगर आप मोहतात वुजूबाना बनवाना याहते हैं तो ईसी रिसाले के पीछे दिये हुअे नकशे से रहनुमाई हासिल कीजिये.

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : جسدك لله تعالى عليه و آله وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरुद शरीक न पढे तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शप्स है. (तर्जुमा)

● ઉબ્લૂયૂસી (W.C.) મેં પાની સે ઇસ્તિન્જા કરને કી સૂરત મેં ઉમૂમન દોનોં પાઉ કે ટપ્નોં કી તરફ છીંટિ આતે હેં લિહાઝા ફરાગત કે બા'દ એહતિયાતન પાઉ કે યેહ હિસ્સે ધો લેને ચાહિએં.

### વુઝૂખાના બનવાને કા તરીકા

એક નલ કે ઘરેલૂ વુઝૂખાને કી કુલ મસાહત યા'ની લમ્બાઈ સાઢે બિયાલીસ ઇન્ચ ઓર ચૌડાઈ પૌને ઉન્ચાસ ઇન્ચ, ઊંચાઈ ઝમીન સે પૌને ચૌદહ ઇન્ચ, ઇસ કે ઊપર મઝીદ સાઢે સાત ઇન્ચ ઊંચી નિશસ્ત ગાહ (SEAT) જિસ કા અર્ઝ (યા'ની ચૌડાઈ) સાઢે બત્તીસ ઇન્ચ ઓર લમ્બાઈ એક સિરે સે દૂસરે સિરે તક યા'ની ઝીને કી માનિન્દ, ઇસ નિશસ્ત ગાહ ઓર સામને કી દીવાર કા દરમિયાની ફાસિલા 25 ઇન્ચ, આગે કી તરફ ઇસ તરહ ઢલવાન (slope) બનવાઈયે કે નાલી સાઢે સાત ઇન્ચ સે ઝિયાદા ન હો, પાઉ રખને કી જગહ કદમ કી લમ્બાઈ સે મા'મૂલી સી ઝિયાદા મ-સલન કુલ સવા ગ્યારહ ઇન્ચ હો, ઓર ઇસ સારી જગહ કા અગલા હિસ્સા સાઢે ચાર ઇન્ચ ખુર-દરા રખિયે તાકે રગડ કર પાઉ કા મૈલ (ખુસૂસન સર્દિયોં મેં) છુડાયા જા સકે. L (એલ) યા u (યૂ) સાપ્ત કા “મિક્સચર નલ” નાલી કી ઝમીન સે 32 ઇન્ચ ઊપર હો, નલ કી તરકીબ ઇસ તરહ રખિયે કે પાની કી ધાર ઢલવાન (slope) પર ગિરે ઓર આપ કે લિયે દાંતોં કે ખૂન વગૈરા નજાસત સે બચના આસાન હો. હસ્બે ઝરૂરત તરમીમ કર કે મસાજિદ મેં ભી ઇસી તરકીબ સે વુઝૂખાના બનવાયા જા સકતા હૈ.

નોટ : અગર ટાઈલ્ઝ લગવાની હોં તો કમ અઝ કમ ઢલવાન મેં સફેદ રંગ કી લગવાઈયે તાકે મિસ્વાક કરને મેં અગર દાંતોં સે ખૂન આતા હો તો થૂક વગૈરા મેં નઝર આ જાએ.



ફરમાને મુસ્તકા صَلَّی اللہُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ : اِس شَافِسْ کِی ناک پاک آلاؤدِہِ اِوِ اِس کَے پاس مِرا اِک کِ اِوِ اِوِر وِوِہِ  
مُؤا پَر دُڑدِہِ پَاک ن پَدِہِ. (۴۷)

## “યા રસૂલે ખુદા” કે નવ હુરૂફ કી નિસ્બત સે વુઝૂખાને કે 9 મ-દની ફૂલ

- ❶ મુસ્કિન હો તો ઈસી રિસાલે કે પીછે દિયે હુએ નકશે સે રહનુમાઈ હાસિલ કર કે અપને ઘર મેં વુઝૂખાના બનવાઈયે.
- ❷ (મિ'માર કે દલાઈલ સુને બિગૈર) દિયે હુએ નકશે કે મુતાબિક અને હુએ ઘરેલૂ વુઝૂખાને કે બાલાઈ (યા'ની પાઉ રખને વાલે) ફર્શ કી ઢલવાન (slope) દો ઈન્ય રખિયે.
- ❸ અગર એક સે ઝિયાદા નલ લગવાને હોં તો દો નલોં કે દરમિયાન 25 ઈન્ય કા ફાસિલા રખિયે.
- ❹ વુઝૂખાને કી ટોંટી મેં હસ્બે ઝરૂરત કપડા યા પ્લાસ્ટિક કી નિપલ લગા લીજિયે.
- ❺ અગર પાઈપ દીવાર કે બાહર સે લગવાએં તો નિશસ્ત ગાહ ઝરૂરતન એક યા દો ઈન્ય મઝીદ દૂર કર લીજિયે.
- ❻ બેહતર યેહ હૈ કે કચ્ચા કામ કરવા કર એકઆધ બાર ઉસ પર બૈઠ કર યા વુઝૂ કર કે અચ્છી તરહ દેખ લેને કે બા'દ પુખ્તા કરવાઈયે.
- ❼ વુઝૂખાને યા હમ્મામ વગૈરા કે ફર્શ પર ટાઈલ્સ લગવાને હોં તો ખુર-દરે (Slip Resistance Tiles) લગવાઈયે તાકે ફિસલને કા ખતરા કમ હો જાએ.
- ❽ પાઉ રખને કી જગહ કા સિરા (યા'ની કનારા) ઓર ઈસ કી ઢલાન કે કમ અઝ કમ દો દો ઈન્ય હિસ્સે પર ટાઈલ્સ ન હો બલકે વોહ હિસ્સા સીમેન્ટ સે ખુર-દરા ઓર ગોલ બનવાઈયે તાકે ઝરૂરતન પાઉ રગડ કર મૈલ છુડાયા જા સકે.

﴿۹﴾ **करमाने मुस्तफ़ा** : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى غَلِيظٌ وَبِئْسَ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (क़ुरआन)

﴿9﴾ **बावर्यी** जाना, गुस्ल जाना, बैतुल जला का इर्श, जुला सेह्न, छत, मस्जिद का वुजूजाना और जहां जहां पानी बहाने की ज़रूरत पड़ती है उन मकामात के इर्श की ढलवान (slope) मि'मार जो बताओ उस से बिला जिजक डेढ गुना (म-सलन वोह दो इन्ध कहे तो आप तीन इन्ध) रजवाइये. मि'मार तो येही कहेगा के आप झिक मत कीजिये अक कतरा भी पानी नहीं रुकेगा अगर आप उस की बातों में आ गओ तो हो सकता है ढलवान बराबर न बने लिहाजा उस की बात पर अ'तिमाद नहीं करेंगे तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** इस का फ़ाअेदो आप जुद ही देज लेंगे क्यूंके मुशा-हदो येही है के अक्सर इर्श वगैरा पर जगह जगह पानी पडा रह जाता है.

### जिन का वुजू न रहता हो उन के लिये 6 अहकाम

﴿1﴾ **कतरा** आने, पीछे से रीह पारिज होने, जम्म बहने, दुपती आंघ से ब वजहे मरज आंसू बहने, कान, नाइ, पिस्तान से पानी निकलने, झोडे या नासूर से रतूबत बहने और दस्त आने से वुजू टूट जाता है. अगर किसी को इस तरह का मरज मुसव्सल जारी रहे और शुइअ से आभिर तक पूरा अक वक्त गुजर गया के वुजू के साथ नमाजे इर्ज अदा न कर सका वोह शर-अन मा'जूर है, अक वुजू से उस वक्त में जितनी नमाजें याहे पढे. इस का वुजू उस मरज से नहीं टूटेगा. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 385, ००३, **رُدُّوا النَّحْتَارَ وَرُدُّوا النَّحْتَارَ**) इस मस्अले को मजीद आसान लइजों में समजाने की कोशिश करता हूं. इस किस्म के मरीज और मरीजा अपने मा'जूरे शर-ई होने न होने की ज़ांय इस तरह करें के कोई सी भी दो इर्ज नमाजों के दरमियानी वक्त में कोशिश करें के वुजू कर के तहारत के साथ कम अज कम इर्ज रकअतें अदा की जा सकें. पूरे वक्त के दौरान बार बार कोशिश के बा वुजूद अगर इतनी मोहलत

इरमाने मुस्तका صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : मुज पर दुइद शरीफ पढो अल्लाह غزوجل तुम पर रहमत भेजेगा. (अिन सदी)

नहीं मिल पाती, वोह ईस तरह, के कभी तो दौराने वुजू ही उजूर लाहिक हो जाता है और कभी वुजू मुकम्मल कर लेने के बाद नमाज अदा करते हुअे, उता के आभिरि वक्त आ गया तो अब उनहें ईजाजत है के वुजू कर के नमाज अदा करें नमाज हो जायेगी, अब याहे दौराने अदाईगिये नमाज, बीमारी के बाईस नजासत बदन से पारिज ही क्यूं न हो रही हो. हु-कडाअे किराम رَحْمَهُمُ اللهُ السَّلَام इरमाते हैं : किसी शप्स की नकसीर फूट गई या उस का जम्भ बह निकला तो वोह आभिरि वक्त का ईन्तिजार करे अगर पून मुक्तअ न हो (बहके मुसल्लव या वक्के वक्के से जारी रहे) तो वक्त निकलने से पहले वुजू कर के नमाज अदा करे.

(الْبَحْرُ الرَّاقِعُ ج ١ ص ٣٧٤-٣٧٣)

﴿2﴾ ईर्ज नमाज का वक्त जाने से मा'जूर का वुजू टूट जाता है जैसे किसी ने अस्स के वक्त वुजू किया था तो सूरज गुरुब होते ही वुजू जाता रहा और अगर किसी ने आइताब निकलने के बाद वुजू किया तो जब तक जोहर का वक्त भत्म न हो वुजू न जायेगा के अभी तक किसी ईर्ज नमाज का वक्त नहीं गया. ईर्ज नमाज का वक्त जाते ही मा'जूर का वुजू जाता रहता है और येह हुक्म उस सूरत में होगी जब मा'जूर का उजूर दौराने वुजू या बाद वुजू जाहिर हो, अगर अैसा न हो और दूसरा कोई हदस (या'नी वुजू तोडने वाला मुआ-मला) भी लाहिक न हो तो ईर्ज नमाज का वक्त जाने से वुजू नहीं टूटेगा.

(المختار، ردُّ الْمُحْتَار ج ١ ص ٥٥٥، 386, जि. 1, स. 386)

﴿3﴾ जब उजूर साबित हो गया तो जब तक नमाज के ओक पूरे वक्त में ओक बार भी वोह चीज पाई जाये मा'जूर ही रहेगा. म-सलन किसी को सारा वक्त कतरा आता रहा और ईतनी मोहलत ही न मिली के

﴿۴﴾ **करमाने मुस्तक़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज़ पर कसरत से दुरुददे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज़ पर दुरुददे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मज़िहरत है. (भा. ५)

वुजू कर के इर्ज़ अदा कर ले तो मा'ज़ूर हो गया. अब दूसरे अवकात में र्तना मौकअ मिल जाता है के वुजू कर के नमाज़ पढ ले मगर अकआध दफ़आ कतरा आ जाता है तो अब ली मा'ज़ूर है. हां अगर पूरा ओक वक्त औसा गुज़र गया के ओक बार ली कतरा न आया तो मा'ज़ूर न रहा फिर जब कली पहली डालत आई (या'नी सारा वक्त मुसल्लल भरज हुवा) तो फिर मा'ज़ूर हो गया. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 385)

﴿4﴾ **मा'ज़ूर का वुजू** उस चीज़ से नहीं जाता जिस के सभब मा'ज़ूर है हां अगर दूसरी कोई चीज़ वुजू तोडने वाली पाई गई तो वुजू जाता रहा म-सलन जिस को रीह पारिज होने का भरज है कतरा निकलने से उस का वुजू टूट जाओगा. और जिस को कतरे का भरज है उस का रीह पारिज होने से वुजू जाता रहेगा. (अंजन, स. 586)

﴿5﴾ **मा'ज़ूर ने किसी हदस** (या'नी वुजू तोडने वाले अमल) के बा'द वुजू किया और वुजू करते वक्त वोह चीज़ नहीं है जिस के सभब मा'ज़ूर है फिर वुजू के बा'द वोह उज़र वाली चीज़ पाई गई तो वुजू टूट गया (येह हुकम ईस सूरत में होग़ा जब मा'ज़ूर ने अपने उज़र के बजाए किसी दूसरे सभब की वजह से वुजू किया हो अगर अपने उज़र की वजह से वुजू किया तो बा'दे वुजू उज़र पाए जाने की सूरत में वुजू न टूटेगा) म-सलन जिस को कतरा आता था उस की रीह पारिज हुई और उस ने वुजू किया और वुजू करते वक्त कतरा बन्द था और वुजू करने के बा'द कतरा आया तो वुजू टूट गया. हां अगर वुजू के दरमियान कतरा जारी था तो न गया.

(बहारे शरीअत, जि. 1, स. 387, ००७, رَدُّ الْمُحْتَرَجِ ١ ص ٣٨٧)

﴿6﴾ **मा'ज़ूर को औसा उज़र** हो के जिस के सभब कपडे नापाक हो जाते हैं

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ: عَنْ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ مَضَى فِي رَأْسِهِ شَيْئًا مِنْ مَخْرُوجٍ فَهُوَ كَمَا كَانَ يَوْمَئِذٍ. (بخاری)

અજ લિખતા હૈ ઔર કીરાત ઉહુદ પહાડ જિતના હૈ. (بخاری)

તો અગર એક દિરહમ સે ઝિયાદા નાપાક હો ગએ ઔર જાનતા હૈ કે ઈતના મૌકઅ હૈ કે ઈસે ધો કર પાક કપડોં સે નમાઝ પઢ લૂંગા તો પાક કર કે નમાઝ પઢના ફર્જ હૈ ઔર અગર જાનતા હૈ કે નમાઝ પઢતે પઢતે ફિર ઉતના હી નાપાક હો જાએગા તો અબ ધોના ઝરૂરી નહીં. ઈસી સે પઢે અગર્યે મુસલ્લા ભી આલૂદા હો જાએ તબ ભી ઉસ કી નમાઝ હો જાએગી. (બહારે શરીઅત, જિ. 1, સ. 387)

(મા'ઝૂર કે વુઝૂ કે તફ્સીલી મસાઈલ ફતાવા ર-ઝવિયા મુખર્રજા જિલ્દ 4 સફહા 367 તા 375, બહારે શરીઅત જિલ્દ 1 સફહા 385 તા 387 સે મા'લૂમ કર લીજિયે)

### સાત મુ-તફરિકાત

﴿1﴾ પેશાબ, પાખાના, મની, કીડા યા પથરી મર્દ યા ઔરત કે આગે યા પીછે સે નિકલેં તો વુઝૂ જાતા રહેગા. (عالمگیری ج 1 ص 1) ﴿2﴾ મર્દ યા ઔરત કે પીછે સે મા'મૂલી સી હવા ભી ખારિજ હુઈ વુઝૂ ટૂટ ગયા. મર્દ યા ઔરત કે આગે સે હવા ખારિજ હુઈ વુઝૂ નહીં ટૂટેગા. (بخاری, બહારે શરીઅત, જિ. 1, સ. 304) ﴿3﴾ બેહોશ હો જાને સે વુઝૂ ટૂટ જાતા હૈ. (عالمگیری ج 1 ص 1) ﴿4﴾ બા'ઝ લોગ કહતે હૈં કે ખિન્ઝીર કા નામ લેને સે વુઝૂ ટૂટ જાતા હૈ યેહ ગલત હૈ ﴿5﴾ દૌરાને વુઝૂ અગર રીહ ખારિજ હો યા કિસી સબબ સે વુઝૂ ટૂટ જાએ તો નએ સિરે સે વુઝૂ કર લીજિયે પહલે ધુલે હુએ આ'ઝા બે ધુલે હો ગએ. (માખૂઝ અઝ ફતાવા ર-ઝવિયા મુખર્રજા, જિ. 1, સ. 255) ﴿6﴾ કુરઆને પાક યા ઉસ કી કિસી આયત કો યા કિસી ભી ઝબાન મેં કુરઆને પાક કા તરજમા હો ઉસ કો બે વુઝૂ ધૂના હરામ હૈ (બહારે શરીઅત, જિ. 1, સ. 326, 327 વગેરા) ﴿7﴾ આયત કો બે ધૂએ દેખ કર યા ઝબાની બે વુઝૂ પઢને મેં હરજ નહીં.

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : جس نے کیتاબ میں صلی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ وسلم پر દુરૂદ પાક લિખા તો જબ તક મેરા નામ ઉસ મેં રહેગા ફિરિશ્તે ઉસ કે લિયે ઈસ્તિફાર કરતે રહેંગે. (ખત્રા)

## આયત લિખે હુએ કાગઝ કે પિછલે

### હિસ્સે કે છૂને કા અહમ મસ્અલા

કિતાબ યા અખ્બાર મેં જિસ જગહ આયત લિખી હૈ ખાસ ઉસ જગહ કો બિલા વુઝૂ હાથ લગાના જાઈઝ નહીં ઉસી તરફ હાથ લગાયા જિસ તરફ આયત લિખી હૈ ખ્વાહ ઉસ કી પુશ્ત પર (યા'ની લિખી હુઈ આયત કે ઐન પીછે) દોનોં ના જાઈઝ હૈં (આયત યા ઉસ કે ઐન પિછલે હિસ્સે કે ઈલાવા), બાકી વરક કે છૂને મેં હરજ નહીં, પઢના બે વુઝૂ જાઈઝ હૈ. નહાને કી હાજત હો તો (પઢના ભી) હરામ હૈ. وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَمُ

(ફતાવા ર-ઝવિયા મુખર્રજ, જિ. 4, સ. 366)

## બે વુઝૂ કુરઆને મજીદ કો કહીં સે ભી નહીં છૂ સકતા

બે વુઝૂ આયત કો છૂના તો ખુદ હી હરામ હૈ અગર્યે આયત કિસી ઔર કિતાબ મેં લિખી હો મગર કુરઆને મજીદ કે સાદા હાશિયા બલ્કે પુઢોં બલ્કે ચોલી (યા'ની જો કપડા યા ચમડા ગત્તે કે સાથ ચિપકા યા સિલા હો ઉસ) કા ભી છૂના હરામ હૈ હાં “જુઝદાન” મેં હો તો જુઝદાન કો હાથ લગા સકતા હૈ. બે વુઝૂ અપને સીને સે ભી મુસ્હફ શરીફ કો મસ નહીં કર (યા'ની છૂ નહીં) સકતા. બે વુઝૂ કી ગરદન પર લમ્બી ચાદર કા એક કોના પડા હુવા હૈ ઔર વોહ ઉસ કે દૂસરે કોને કો હાથ પર રખ કર મુસ્હફ શરીફ છૂના યાહે અગર ચાદર ઈતની લમ્બી હૈ કે ઉસ શખ્સ કે ઉઠને બૈઠને સે દૂસરે ગોશે (યા'ની કોને) તક હ-ર-કત ન પહોંચેગી તો જાઈઝ હૈ વરના નહીં. (ફતાવા ર-ઝવિયા મુખર્રજ, જિ. 4, સ. 724, 725)

## વુઝૂ મેં પાની કા ઘસરાફ

આજ કલ અક્સર લોગ વુઝૂ મેં તેઝ નલ ખોલ કર બે તહાશા પાની બહાતે હૈં, હત્તા કે બા'ઝ તો વુઝૂખાને પર આતે હી નલ ખોલ દેતે

करमाने मुस्तक़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर एक बार दुइडे पाक पढा अल्लाह उर उर एस पर एस रडमते बेजता है. (स्म)

हैं, एस के बा'द आस्तीन बढाते हैं, उतनी देर तक **مَعَادُ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ** पानी ज़ाभेअ होता रहता है, एसी तरह मसूह के दौरान अक्सरियत नल पुला छोड देती है ! हम सब को अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** से डर कर एसराफ़ से बयना याडिये, डियामत के रोज़ ज़र्रे ज़र्रे और कतरे कतरे का हिसाब डोगा. एसराफ़ की मजम्मत में चार अछाडीसे मुभा-रका सुनिये और भौके पुढा वन्दी **عَزَّوَجَلَّ** से लरजिये :

### «1» ज़री नहर पर भी एसराफ़

अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** के प्यारे रसूल, रसूले मकबूल, सय्यिदह आभिना **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के गुलशन के मडकते झूल **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهَا** उजरते सय्यिदुना सा'द **عَنْهُ** पर गुजरे तो वोड वुजू कर रहे थे. एसशदि फ़रमाया : येड एसराफ़ कैसा ? अर्ज की : क्या वुजू में भी एसराफ़ है ? फ़रमाया : “हां अगर्थे तुम ज़री नहर पर डो.”

(سَنَنِ ابْنِ مَاجَهٗ ١ ص ٢٠٤ حَدِيثُ ٤٢٠)

### आ'ला डरत **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** का इतवा

भेरे आका आ'ला डरत, एसमामे अडले सुन्नत **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** एस डडीसे पाक के तडत फ़रमाते हैं : डडीस ने नडरे ज़री में भी एसराफ़ साबित फ़रमाया और एसराफ़ शर-अ में मजभूम डी डो कर आया है. आयअे करीमा :

**وَلَا تُسْرِفُوا إِنَّهُ لَا يُحِبُّ** (तर-ज-मअे कन्जुल एसमान : बेशक बे ज़ा  
**السَّرْفِينِ** (प १०८ الانعام: १६१) अरयने वाले उसे पसन्द नडी.)

मुत्वक है तो येड एसराफ़ भी मजभूम व मन्नूअ डी डोगा बडके पुढ एसराफ़ झिल वुजू में भी सीगअे नड्य वारिद और नड्य डकीकतन मुझीडे तडरीम. (या'नी वुजू में एसराफ़ की नड्य (मुमा-न-अत) का डुकम आया है

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : જો શપ્સ મુઝ પર દુરૂદ પાક પઢના ભૂલ ગયા વોહ જન્નત કા રાસ્તા ભૂલ ગયા. (ખૂરૂન)

और छकीकत में मुमा-न-अत का हुक्म हराम होने का झांखेदा देता है।

(इतावा २-अविध्या मुभर्रजा, जि. 1, स. 731)

## मुफ्ती अहमद यार ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْخَنَّانِ كِي तइसीर

मुफ्त्सिरे शहीर હઝરતે મુફ્તી અહમદ યાર ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْخَنَّانِ

આ'લા હઝરત عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى કે ફતવા મેં પેશ કર્દા સૂ-રતુલ અન્-આમ કી આયતે કરીમા નમ્બર 141 કે તહ્ત બે જા ખર્ય (યા'ની ઈસરાફ) કી તફ્સીલ બયાન કરતે હુએ રકમ તરાઝ હેં : “ના જાઈઝ જગહ પર ખર્ય કરના ભી બે જા ખર્ય હૈ ઓર સારા માલ ખૈરાત કર કે બાલ બચ્ચોં કો ફકીર બના દેના ભી બે જા ખર્ય હૈ, ઝરૂરત સે ઝિયાદા ખર્ય ભી બે જા ખર્ય હૈ ઈસી લિયે આ'ઝાએ વુઝૂ કો (બિલા ઈજાઝતે શર-ઈ) યાર બાર ધોના ઈસરાફ માના ગયા હૈ.”

(નૂરુલ ઈસ્ફાન, સ. 232)

### ﴿2﴾ ઇસરાફ ન કર

હઝરતે સય્યિદુના અબ્દુલ્લાહ બિન ઉમર رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ફરમાતે

હેં : અલ્લાહ ગ્રેઝલ્લે કે મહબૂબ, દાનાએ ગુયૂબ, મુનઝ્ઝહુન અનિલ ઉયૂબ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ને એક શપ્સ કો વુઝૂ કરતે દેખા, ફરમાયા : ઈસરાફ ન કર ઈસરાફ ન કર.

(سُنَنِ ابْنِ مَاجَةَ ج ١ ص ٢٥٤ حديث ٤٢٤)

### ﴿3﴾ ઇસરાફ શૈતાની કામ હૈ

હઝરતે સય્યિદુના અનસ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ સે રિવાયત હૈ : વુઝૂ મેં

બહુત સા પાની બહાને મેં કુછ ખૈર (ભલાઈ) નહીં ઓર વોહ કામ શૈતાન કી તરફ સે હૈ.

(كُنُزُ الْعَمَال ج ٩ ص ٤٤٤ حديث ٢٦٢٠٠)

### ﴿4﴾ જન્નત કા સફેદ મહલ માંગના કેસા ?

હઝરતે સય્યિદુના અબ્દુલ્લાહ ઈબ્ને મુગફફલ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ને

અપને બેટે કો ઈસ તરહ દુઆ માંગતે સુના, કે ઈલાહી! غَرِّ وَجَلِّ ! મૈં તુઝ સે



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइदे पाक न पढा तउकीक वोह बढ अप्त हो गया. (उंन)

જન્મત કા દાહુની (યા'ની સીધી) તરફ વાલા સફેદ મહલ માંગતા હું. તો ફરમાયા કે એ મેરે બચ્ચે ! અલ્લાહ عَزَّ وَجَلَّ سے જન્મત માંગો ઓર દોઝખ સે ઉસ કી પનાહ માંગો. મેં ને રસૂલુલ્લાહ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કો ફરમાતે સુના કે ઈસ ઉમ્મત મેં વોહ કૌમ હોગી જો વુઝૂ ઓર દુઆ મેં હદ સે તજાવુઝ કિયા કરેગી.

(سُنَنِ ابوداؤد ج ۱ ص ۶۸ حدیث ۹۶)

મુફસ્સિરે શહીર હકીમુલ ઉમ્મત હઝરતે મુફતી અહમદ યાર ખાન رَحْمَةُ الرَّحْمَانِ ઈસ હદીસે પાક કે તહત ફરમાતે હેં : દુઆ મેં તજાવુઝ (યા'ની હદ સે બઢના) તો યેહ હે કે એસી બાત કા તઅય્યુન કિયા જાએ જિસ કી ઝરૂરત નહીં જૈસે ઉન કે સાહિબ ઝાદે ને કિયા. ફિરદૌસ (જો કે સબ સે આ'લા જન્મત હે ઉસ કા) માંગના બહુત બેહતર હે કે ઈસ મેં શખ્સી તઅય્યુન (યા'ની અપની તરફ મુકરર કરના) નહીં નૌઈ તકરુર (નૌઅ યા'ની કિસ્મ મુકરર કરના) હે ઈસ કા હુકમ દિયા ગયા હે.

(મિરઆતુલ મનાજીહ, જિ. 1, સ. 293)

## બુરા કિયા, મુલ્મ કિયા

એક આ'રાબી ને ખિદમતે અકદસ હુઝૂર સય્યિદે આલમ رَحْمَةُ الرَّحْمَانِ મેં હાઝિર હો કર વુઝૂ કે બારે મેં પૂછા : હુઝૂરે અકદસ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ને ઉન્હેં વુઝૂ કર કે દિખાયા જિસ મેં હર ઉઝૂવ તીન તીન બાર ધોયા ફિર ફરમાયા : વુઝૂ ઈસ તરહ હે, તો જો ઈસ સે ઝાઈદ કરે યા કમ કરે ઉસ ને બુરા કિયા ઓર મુલ્મ કિયા.

(سُنَنِ نَسَائِي ص ۳۱ حدیث ۱۴۰)

## ઇસરાફ સિફ દો સૂરતોં મેં હી ગુનાહ હે

મેરે આકા આ'લા હઝરતે ઈમામ અહમદ રઝા ખાન رَحْمَةُ الرَّحْمَانِ લિખતે હેં : યેહ વઈદ ઈસ સૂરત મેં હે કે જબ યેહ એ'તિકાદ રખતે હુએ

ફરમાને મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : જિસ ને મુઝ પર એક બાર દુરૂદે પાક પઢા અલ્લાહ ઉસ પર દસ રહમતે બેજતા હૈ. (مسلم)

ઝિયાદા કરે કે ઝિયાદા કરના હી સુન્નત હૈ. ઓર અગર તસ્લીસ (યા'ની તીન બાર ધોને) કો સુન્નત માના ઓર વુઝૂ પર વુઝૂ કે ઈરાદે યા શક કે વક્ત ઈત્મીનાને કલ્બ કે લિયે યા તબરીદ (યા'ની ઠન્ક કે હુસૂલ) યા તન્જીફ (યા'ની સફાઈ) કે લિયે ઝિયાદા ક્રિયા યા કિસી હાજત કી વજહ સે કમી કી તો કોઈ હરજ નહીં. સિર્ફ દો સૂરતોં મેં ઈસરાફ ના જાઈઝ વ ગુનાહ હોતા હૈ એક યેહ કે કિસી ગુનાહ મેં સર્ફ વ ઈસ્તિ'માલ કરેં, દૂસરે બેકાર મહૂઝ માલ ઝાએઝ કરેં. વુઝૂ વ ગુસ્લ મેં તીન બાર સે ઝાઈદ પાની ડાલના જબ કે ગ-રઝે સહીહ (યા'ની જાઈઝ મક્સદ) સે હો હરગિઝ ઈસરાફ નહીં કે જાઈઝ ગરઝ મેં ખર્ય કરના ન ખુદ મા'સિયત (યા'ની ના ફરમાની) હૈ ન બેકાર ઈઝાઅત (યા'ની ઝાએઝ કરના).

(ફતાવા ર-ઝવિય્યા જિ. 1, જુઝ : ૫, સ. 940 તા 942)

### અ-મલી તૌર પર વુઝૂ સીખિયે

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! ઈસ હદીસે પાક સે મા'લૂમ હુવા કે સિખાને કે લિયે ખુદ અ-મલી તૌર પર વુઝૂ કર કે દૂસરે કો દિખાના સરકારે મદીના صَلَّی اللہُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم સે સાબિત હૈ. મુબલિગીન કો ચાહિયે કે ઈસ હદીસે પાક પર અમલ કરતે હુએ બિગૈર ઈસરાફ કે સિર્ફ હસ્બે ઝરૂરત પાની બહા કર તીન તીન બાર આ'ઝા ધો કર વુઝૂ કર કે ઈસ્લામી ભાઈયોં કો દિખાએં. બિલા ઝરૂરતે શર-ઈ કોઈ ઉઝૂવ ચાર બાર ન ધુલે ઈસ કા ખયાલ રખા જાએ, ફિર જો બ ખુશી અપની ઈસ્લાહ કરવાના ચાહે વોહ ભી વુઝૂ કર કે મુબલિગ કો દિખાએ ઓર અપની ગ-લતિયાં દૂર કરવાએ. દા'વતે ઈસ્લામી કે સુન્નતોં કી તરબિય્યત કે મ-દની કાફિલોં મેં આશિકાને રસૂલ કી સોહબત મેં યેહ મ-દની કામ અહૂસન તરીકે પર હો સકતા હૈ. દુરુસ્ત વુઝૂ કરના ઝરૂર ઝરૂર ઝરૂર સીખ લીજિયે.

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى غَلِيظٌ عَلَيْهِ وَابِرٌ سَلَمٌ : જો શખ્સ મુઝૂ પર દુરૂદે પાક પઢના ભૂલ ગયા વોહ જન્મત કા રાસ્તા ભૂલ ગયા. (ટર્કી)

સિર્ફ એકઆધ બાર વુઝૂ કા તરીકા પઢ લેને સે સહીહ મા'નોં મેં વુઝૂ કરના આ જાએ યેહ બહુત મુશ્કિલ હૈ, બાર બાર મશક કરની હોગી. વુઝૂ સીખને કે લિયે દા'વતે ઇસ્લામી કે ઇશાઅતી ઇદારે મક-ત-બતુલ મદીના કી જારી કર્દા V.C.D બનામ : “વુઝૂ કા તરીકા” દેખના ઇન્તિહાઈ મુફીદ હૈ.

### મસ્જિદ ઓર મદ્રસે કે પાની કા ઇસરાફ

મસ્જિદ વ મદ્રસે વગૈરા કે વુઝૂખાને કા પાની “વક્ફ” કે હુકમ મેં હોતા હૈ. ઇસ પાની ઓર અપને ઘર કે પાની કે અહકામ મેં ફર્ક હોતા હૈ. જો લોગ મસ્જિદ કે વુઝૂખાને પર બે દર્દી કે સાથ પાની બહાતે હૈં બલકે વુઝૂ મેં બિલા ઝરૂરત ફક્ત ગફલત યા જહાલત કે સબબ તીન સે ઝાઈદ મર્તબા આ'ઝા ધોતે હૈં વોહ ઇસ મુબારક ફતવે પર ખૂબ ગૌર ફરમાએ, ખૌફે ખુદા عَزَّوَجَلَّ સે લરઝેં ઓર તૌબા કરેં. યુનાન્ચે મેરે આકા આ'લા હઝરત, ઇમામે અહલે સુન્નત, વલિય્યે ને'મત, અઝીમુલ બ-ર-કત, અઝીમુલ મર્તબત, પરવાનએ શમ્એ રિસાલત, મુજદ્દિદે દીનો મિલ્લત, હામિયે સુન્નત, માહિયે બિદ્અત, આલિમે શરીઅત, પીરે તરીકત, બાઈસે ખૈરો બ-ર-કત, હઝરતે અલ્લામા મૌલાના અલહાજ અલ હાફિઝ અલ કારી શાહ ઇમામ અહમદ રઝા ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ફરમાતે હૈં :  
 अगर वकफ पानी से वुजु किया तो जियादा भय करना बिल इत्तिफाक उराम है क्यूंके इस में जियादा भय करने की इजाजत नहीं दी गई और मदारिस का पानी इसी किस्म का होता है जो के सिर्फ उन ही लोगों के लिये वकफ होता है जो शर-ई वुजु करते हैं. (इतावा २-अविध्या मुभर्रजा, जि. 1, स. 658)

મીઠે મીઠે ઇસ્લામી ભાઈયો ! જો અપને આપ કો ઇસરાફ સે નહીં બચા પાતા ઉસે ચાહિયે કે મમ્લૂકા (યા'ની અપની મિલ્કિયત કે) મ-સલન અપને ઘર કે પાની સે વુઝૂ કરે. مَعَاذَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ ઇસ કા યેહ મતલબ નહીં કે

﴿3﴾ **करमाने मुस्तफ़ा** عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ठिक़ हुवा और उस ने मुज पर दुइद शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की. (عبدالرزاق)

जाती पानी के इसराफ़ की फ़ुली छूट है बल्के घर में फ़ूब मशक़ कर के शर-ई वुजू सीफ़ ले ताके मस्जिद के पानी का इसराफ़ कर के हराम का मुर-तकिअ न हो.

### “अहमद रज़ा” के सात दुइद की निरबत से आ'वा हरत की तरफ़ से इसराफ़ से बयने की 7 तदाबीर

﴿1﴾ आ'ज लोग युल्लू लेने में पानी अइसा डालते हैं के उबल जाता है डालां के जो गिरा बेकार गया इस से अहतियात खाडिये.

﴿2﴾ हर युल्लू बरा होना जरूरी नहीं बल्के जिस काम के लिये लें उस का अन्दाज़ा रभें म-सलन नाक में नर्म बांसे (या'नी नर्म हड्डी) तक पानी यढाने को पूरा युल्लू कया जरूर निस्फ़ (या'नी आधा) भी काफ़ी है बल्के बरा युल्लू कुल्ली के लिये भी दरकार नहीं.

﴿3﴾ लोटे की टोंटी मु-तवस्सित मो'तदिल (या'नी दरमियानी) खाडिये के न अइसी तंग के पानी ब-देर (या'नी देर में) दे न फ़राफ़ (या'नी कुशादा) के ड़ाजत से ज़ियादा गिराअे, इस का इर्क़ यूं मा'लूम हो सकता है के कटोरों में पानी ले कर वुजू कीजिये तो अहुत फ़र्य होगा यूंही फ़राफ़ (या'नी कुशादा) टोंटी से अडाना ज़ियादा फ़र्य का आ'स है. अगर लोटा अइसा (या'नी कुशादा टोंटी वाला) हो तो अहतियात करे पूरी धार न गिराअे बल्के आरीक़. (नल फ़ोलने में भी इन्हीं आतों का फ़याल रभिये)

﴿4﴾ आ'ज़ा धोने से पहले उन पर भीगा ड़ाथ ड़ैर ले, के पानी जल्ल दौउता है और थोडा (पानी), अहुत (से पानी) का काम देता है, फ़ुसून न भौसिमे सरमा (या'नी सर्दियों) में इस की ज़ियादा ड़ाजत है के आ'ज़ा में फ़ुशकी ड़ोती है और अहती धार बीय में जगड़ फ़ाली छोड़ देती है जैसा के मुशा-हदा (या'नी देफ़ी बाली आत) है.

﴿۵﴾ **इरमाने मुस्तक़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर रोजे जुमुआ हुइद शरीक पड़ेगा में डियामत के दिन उस की शक़ामत कइंगा. (क़ुरआन)

﴿5﴾ कलाईयों पर बाल छों तो तरश्वा (या'नी कटवा) दें के उन का डोना पानी जियादा याडता है और मूंडने से बाल सप्त डो जाते हैं और तराश्ना मशीन से बेहतर के भूब साफ़ कर देती है और सभ से अहसन व अइजल नूरा (अक तरह का बाल सफ़ा पाउडर) है के एन आ'जा में येही सुन्नत से साबित. युनान्ये

उम्मुल मुअमिनीन सय्यि-दतुना उम्मे स-लमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا  
 इरमाती हैं : रसूलुद्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जब नूरा का इस्ति'माल इरमाते तो सत्रे मुकदस पर अपने दस्ते मुबारक से लगाते और बाकी ब-दने मुनव्वर पर अजवाजे मुतह्लरात رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُنَّ लगा देतीं.

(ابن ماجه 4 ص 226 حديث 3701)

और ऐसा न करें तो धोने से पहले पानी से भूब त्रिगो लें के सभ बाल बिछ जाअें वरना जडे बाल की जड में पानी गुजर गया और नोक से न बहा तो वुजू न डोगा.

﴿6﴾ **दस्त व पा** (हाथ व पाँउ) पर अगर लोटे से धार डालें तो नाभुनों से कोडनियों या (पाँउ के) गट्टों के ठीपर (या'नी टप्नों) तक अलल इत्तिसाल (या'नी मुसव्सल) उतारें के अक बार में डर जगह पर अक डी बार गिरे, पानी जब के गिर रहा है और हाथ की रवानी (खिलजुल) में डेर डोगी तो अक जगह पर मुकरर (या'नी बार बार) गिरेगा. (और इस तरह इसराफ़ की सूरत पैदा डो सकती है)

﴿7﴾ **बा'ज** लोग यूं करते हैं के नाभुन से कोडनी तक या (पाँउ के) गट्टे तक बहाते लाअे फिर दोबारा सेडबारा के लिये जो नाभुन की तरफ़ ले गअे तो हाथ न रोका बल्के धार जारी रभी ऐसा न करें, के तस्लीस के इवज (या'नी तीन बार के बजअे) पांच बार डो जाअेगा बल्के डर बार कोडनी

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالسَّلَامُ : મુઝ પર દુરૂદે પાક કી કસરત કરો બેશક યેહ તુમહારે લિયે તહારત હૈ. (બુખારી)

યા (પાઉ કે) ગટ્ટે તક લા કર ધાર રોક લેં ઓર રુકા હુવા હાથ નાખુનોં તક લે જા કર વહાં સે ફિર ઈજરા (પાની જારી) કરેં, કે સુન્નત યેહી હૈ કે નાખુન સે કોહનિયોં યા ગટ્ટોં (ટખ્નોં) તક પાની બહે ન ઈસ કા અક્સ. (યા'ની ઉલટ. મતલબ યેહ કે કોહની યા ગટ્ટે સે નાખુનોં કી તરફ પાની બહાતે હુએ લે જાના સુન્નત નહીં)

કૌલે જામેઅ યેહ હૈ કે સલીકે સે કામ લેં. ઈમામે શાફેઈ રહ્માને કયા ખૂબ ફરમાયા : “સલીકે સે ઉઠાઓ તો થોડા ભી કાફી હો જાતા હૈ ઓર બદ સલીકગી પર તો બહુત (સા) ભી કિફાયત નહીં કરતા.” (અઝ ઈફાદાતે ફતાવા ર-અવિયા મુખર્રજા, જિ. 1, સ. 765, 770)

### “યા રબ ઇસરાફ સે બચા” કે ચૌદહ હુરૂફ કી નિરબત સે ઇસરાફ સે બચને કે લિયે 14 મ-દની ફૂલ

﴿1﴾ આજ તક જિતના ભી ના જાઈઝ ઈસરાફ ક્રિયા હૈ, ઉસ સે તૌબા કર કે આયિન્દા બચને કી ભરપૂર કોશિશ શુરૂઅ કીજિયે.

﴿2﴾ ગૌરો ફિક કીજિયે કે એસી સૂરત મુ-તઅય્યન (યા'ની મુકર્રર) હો જાએ કે વુઝૂ ઓર ગુસ્લ ભી સુન્નત કે મુતાબિક હો ઓર પાની ભી કમ સે કમ ખર્ચ હો. અપને આપ કો ડરાઈયે, કે ક્રિયામત મેં એક એક ઝરે ઓર કતરે કતરે કા હિસાબ હોના હૈ. અલ્લાહ તબા-ર-ક વ તઆલા પારહ 30 સૂ-રતુઝ્ઝિઝલઝાલ આયત નમ્બર 7 ઓર 8 મેં ઈશાદિ ફરમાતા હૈ :

فَسَنْ يَّعْمَلُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا	તર-જ-મએ કન્ઝુલ ઈમાન : તો જો એક
يِّرْكَهُ ۗ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا	ઝર્ા ભર ભલાઈ કરે ઉસે દેખેગા ઓર જો
شَرًّا يَّرْكَهُ ۗ	એક ઝર્ા ભર બુરાઈ કરે ઉસે દેખેગા.

﴿3﴾ વુઝૂ કરતે વક્ત નલ એહતિયાત સે ખોલિયે, દૌરાને વુઝૂ મુઝ્કિના

करमाने सुस्तफ़। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहां भी हो मुज पर दुरुद पढो के तुम्हारा दुरुद मुज तक पहुँचता है. (प्रॉ.)

सूरत में अेक हाथ नल के दस्ते पर रभिये और ज़रूरत पूरी होने पर बार बार नल बन्द करते रहिये.

«4» नल के मुकाबले में लोटे से वुजू करने में पानी कम भर्य होता है जिस से मुम्किन हो वोह लोटे से वुजू करे, अगर नल के बिगैर गुजारा नहीं तो मुम्किन सूरत में येह भी किया जा सकता है के जिन जिन आ'जा में आसानी हो वोह लोटे से धो ले. नल से वुजू करना ज़रूर है, अस किसी तरह भी ईसराफ़ से बचने की सूरत निकालनी चाहिये.

«5» भिस्वाक, कुल्ली, गर-गरा, नाक की सफ़ाई, दाढी और हाथ पाँउ की उँगलियों का बिलाल और मस्ह करते वक्त अेक भी कतरा न टपकता हो यूँ अच्छी तरह नल बन्द करने की आदत बनाईये.

«6» बिल भुसूस सईयों में वुजू या गुस्ल करने नीज बरतन और कपडे वगैरा धोने के लिये गर्म पानी के हुसूल की खातिर नल षोल कर पाँउप में जम्भ शुधा ठन्डा पानी यूँ ही बहा देने के बजाअे किसी बरतन में पहले निकाल लेने की तरकीब बनाईये.

«7» हाथ या मुँह धोने के लिये साबुन का जाग बनाने में भी पानी अेहतियात से भर्य कीजिये. म-सलन हाथ धोने के लिये युल्हू में पानी के थोडे कतरे डाल कर साबुन ले कर जाग बनाया जा सकता है अगर पहले से साबुन हाथ में ले कर पानी डालेंगे तो पानी ज़ियादा भर्य हो सकता है.

«8» ईस्ति'माल के आ'द अैसी साबुन दानी में साबुन रभिये जिस में पानी बिल्कुल न हो, पानी में रभ देने से साबुन धुल कर आअेअे होगा. हाथ धोने के बेसीन के कनारों पर भी साबुन न रभा जाअे, के पानी की वजह से जल्दी धुल जाता है.

ईरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज़ पर दस मरतबा हुज़ुद पाक पढा अल्लाह उंस पर सो रहुमतें नाज़िल करमाता है. (अंज़ा)

﴿9﴾ पी चुकने के बाद गिलास में बचा हुआ पानी ड्रेंक देने के बजाए दूसरे को पिला दीजिये या किसी और 'इस्ति'माल में लीजिये.

﴿10﴾ इल, कपडे, भरतन और इर्श बल्के याय का कप या अेक यम्मय भी धोते वक्त नीज़ नल षोल कर ईस कदर ज़ियादा गैर ज़रूरी पानी बछाने का आज़ कल रवाज़ है के हुस्सास और द़िल जले आदमी से देखा नहीँ ज़ता !!! अै काश !

शायद के उतर ज़अे तेरे द़िल में मेरी बात

﴿11﴾ अक्सर भस्जिदों, घरों, दफ़्तरों, दुकानों वगैरा में ज्वाड म ज्वाड दिन रात बत्तियां जलती A.C. और पंखे चलते रहते हैं, ज़रूरत पूरी हो जाने के बाद बत्तियां, पंखे और A.C. और कम्प्यूटर वगैरा बन्द कर देने की आदत बनाईये, हम सभी को हिसाबे आभिरत से उरना और हर मुआ-मले में ईसराफ़ से बचते रहना चाहिये.

﴿12﴾ 'इस्ति'माले में लोटा 'इस्ति'माल कीजिये के इव्वारे से तहारत करने में पानी भी ज़ियादा खर्च होता है और पाँउ भी अक्सर आलूदा हो ज़ते हैं. हर अेक को चाहिये के हर बार पेशाब करने के बाद अेक लोटा पानी ले कर W.C. के कनारों पर थोडा सा बछाअे फिर कदरे ऒपर से (मगर छींटों से बचते हुअे) अडे सूराअ में डाल द़िया करे اِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ बढबू और ज़रासीम की अइज़ाईश में कमी होगी. "इलश टेंक" से सफ़ाई में पानी बहुत ज़ियादा सर्फ़ होता है.

﴿13﴾ नल से कतरे टपकते रहते हों तो झैरन ईस का डल निकालिये वरना पानी ज़अेअ होता रहेगा. बसा अवकात मसाजिद व मदारिस के नल टपकते रहते हैं मगर कोई पूछने वाला नहीँ होता ! 'इन्ति'जामिया को अपनी जिम्मादारी समज़ते हुअे अपनी आभिरत की बेहतरी के लिये झैरन कोई तरकीब करनी चाहिये.



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ: जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुइद शरीफ़ न पढे तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शअ्स है. (तर्ज़ुम)

﴿14﴾ ખાના ખાને, ચાચ યા કોઈ મશરૂબ પીને, ફલ કાટને વગૈરા મુઆ-મલાત મેં ખૂબ એહતિયાત ફરમાઈયે તાકે હર દાના, હર ગિઝાઈ ઝર્રા ઔર હર કતરા ઈસ્તિ'માલ હો જાએ.

### 40 મ-દની ફૂલોં કા ર-ઝવી ગુલદસ્તા

(તમામ મ-દની ફૂલ ફતાવા ર-ઝવિયા મુખરજા જિલ્લ 4 કે આખિર મેં દિયે હુએ “ફવાઈદે જલીલા” સફહા 613 તા 746 સે લિયે ગએ હેં)

❁ વુઝૂ મેં આંખેં ઝોર સે ન બન્દ કરે મગર વુઝૂ હો જાએગા  
 ❁ અગર લબ (યા'ની હોંટ) ખૂબ ઝોર સે બન્દ કર કે વુઝૂ ક્રિયા ઔર કુલ્લી ન કી વુઝૂ ન હોગા ❁ વુઝૂ કા પાની રોઝે ક્રિયામત નેક્રિયોં કે પલ્લે મેં રખા જાએગા. (મગર યાદ રહે ! ઝરૂરત સે ઝિયાદા પાની ગિરાના ઈસરાફ હે) ❁ મિસ્વાક મૌજૂદ હો તો ઉંગલી સે દાંત માંજના અદાએ સુન્નત વ હુસૂલે સવાબ કે લિયે કાફી નહીં, હાં મિસ્વાક ન હો તો ઉંગલી યા ખર-ખરા (યા'ની ખુર-દરા) કપડા અદાએ સુન્નત કર દેગા ઔર ઔરતોં કે લિયે મિસ્વાક મૌજૂદ હો જબ ભી મિસ્સી કાફી હૈ ❁ અંગૂઠી ઢીલી હો તો વુઝૂ મેં ઉસે ફિરા કર પાની ડાલના સુન્નત હૈ ઔર તંગ હો, કે બે જુમ્બિશ દિયે પાની ન પહોંચે તો ફર્જ. યેહી હુકમ બાલી (યા'ની કાન કે ઝેવર) વગૈરા કા હૈ ❁ આ'ઝા કા મલ મલ કર ધોના વુઝૂ ઔર ગુસ્લ દોનોં મેં સુન્નત હૈ ❁ આ'ઝાએ વુઝૂ ધોને મેં હદે શર-ઈ સે ઈતની ખફીફ તહરીર (યા'ની હર તરફ સે મા'મૂલી સા) બઢાના જિસ સે હદે શર-ઈ તક ઈસ્તીઆબ (યા'ની મુકમ્મલ હોને) મેં શુબા ન રહે વાજિબ હૈ ❁ વુઝૂ મેં કુલ્લી યા નાક મેં પાની ડાલને કા તર્ક મકરૂહ હૈ ઔર ઈસ કી આદત ડાલે તો ગુનહગાર હોગા. યેહ મસ્અલા વોહ લોગ ખૂબ યાદ રખેં જો કુલિયાં ઐસી નહીં કરતે કે હલક તક હર ચીઝ કો ધોએં ઔર વોહ કે પાની જિન કી નાક કો (ફકત) છૂ જાતા હૈ સૂંઘ કર ઊપર નહીં

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक पाक आवूद हो जिस के पास मेरा ठिक हो और वोह मुज पर हुइदे पाक न पड़े. (एम)

ચઢાતે યેહ સબ લોગ ગુનહગાર હેં ઔર ગુસ્લ મેં તો ઐસા ન હો તો સિરે સે ન ગુસ્લ હોગા ન નમાઝ ❀ વુઝૂ મેં હર ઉઝ્વ કા પૂરા તીન બાર ધોના સુન્નતે મુઅક્કદા હૈ, તર્ક કી આદત સે ગુનહગાર હોગા ❀ વુઝૂ મેં જલ્દી ન ચાહિયે બલ્કે દરંગ (યા'ની ઈત્મીનાન) વ એહતિયાત કે સાથ કરે. અવામ મેં જો મશહૂર હૈ કે “વુઝૂ જવાનોં કા સા, નમાઝ બૂઢોં કી સી” યેહ વુઝૂ કે બારે મેં ગલત હૈ ❀ મુંહ ધોને મેં ન ગાલોં પર ડાલે ન નાક પર ન ઝોર સે પેશાની પર, યેહ સબ અફઆલ જુહ્લાલ (યા'ની જાહિલોં) કે હેં બલ્કે બા આહિસ્તગી બાલાએ પેશાની (યા'ની પેશાની કે ઊપર) સે ડાલે કે ઠોડી સે નીચે તક બહતા આએ ❀ વુઝૂ મેં મુંહ સે ગિરતા હુવા પાની મ-સલન કલાઈ પર લિયા ઔર (કલાઈ પર) બહા લિયા (યા'ની મુંહ ધોને મેં મુંહ સે ગિરને વાલે પાની સે હાથ કી કલાઈ નહીં ધો સકતે કે) ઈસ સે વુઝૂ ન હોગા ઔર ગુસ્લ મેં (મુઆ-મલા જુદા હૈ) મ-સલન સર કા પાની પાઉ તક જહાં જહાં ગુઝરેગા પાક કરતા જાએગા વહાં નએ પાની કી ઝરરત નહીં ❀ આદમી વુઝૂ કરને બૈઠા ફિર કિસી માનેઅ (યા'ની રુકાવટ) કે સબબ તમામ (યા'ની મુકમ્મલ) ન કર સકા તો જિતને અફઆલ કિયે ઉન પર સવાબ પાએગા અગર્યે વુઝૂ ન હુવા ❀ જિસ ને ખુદ હી કસ્દ (યા'ની ઈરાદા) કિયા કે આધા વુઝૂ કરેગા વોહ ઈન અફઆલ પર સવાબ ન પાએગા, યૂંહી જો વુઝૂ કરને બૈઠા ઔર બિલા ઉઝૂર નાકિસ (યા'ની અધૂરા) છોડ દિયા વોહ ભી જિતને અફઆલ બજા લાયા ઉન પર મુસ્તહિકે સવાબ ન હોના ચાહિયે ❀ અગર સર પર મીંહ (યા'ની બારિશ) કી બૂદેં ઈતની ગિરીં કી ચહારુમ (યા'ની ચૌથાઈ) સર ભીગ ગયા મસ્હ હો ગયા અગર્યે ઈસ શપ્સ ને હાથ લગાયા ન કસ્દ (યા'ની ન નિચ્યત વ ઈરાદા) કિયા ❀ ઓસ (યા'ની શબનમ) મેં સર બરહૂના (યા'ની નંગે સર) બૈઠા ઔર ઉસ સે ચહારુમ સર કે કદર ભીગ ગયા મસ્હ

﴿رَبِّمَانِهِ مُسْتَقِيمًا﴾ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुइद पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (क़ुरआन)

हो गया ❁ धतने गर्म या धतने सर्द पानी से वुजू मकरूह है जो बदन पर अस्थी तरह न डाला जाये, तक्मीले सुन्नत न करने दे, और अगर कोई इर्ज पूरा करने से मानेअ (या'नी रुकावट) हुवा तो वुजू ही न होगी ❁ पानी बेकार सर्फ़ (या'नी भर्य) करना या इँक देना हराम है. (अपने या दूसरे के पीने के भा'द गिलास या जग का बया हुवा पानी प्वाह म प्वाह इँक देने वाले तौबा करें और आयिन्दा इस से बयें) ❁ नाफ़ से जर्द पानी बह कर निकले वुजू जाता रहे ❁ भून या पीप आंभ में बहा मगर आंभ से बाहर न गया तो वुजू न जायेगा उसे कपडे से पोंछ कर पानी में डाल दें तो (पानी) नापाक न होगा ❁ जम्म पर पट्टी बंधी है उस में भून वगैरा लग गया अगर इस काबिल था के बन्दिश न होती तो बह जाता तो वुजू गया वरना नहीं, न पट्टी नापाक ❁ कतरा उतर आया या भून वगैरा जकर (या'नी उजूवे तनासुल) के अन्दर बहा जब तक उस के सूराभ से बाहर न आये वुजू न जायेगा और पेशाब का सिर्फ़ सूराभ के मुंह पर यमकना (वुजू तोडने के लिये) काड़ी है ❁ ना बालिग न कम्बी बे वुजू हो न जुनुब (या'नी बे गुस्ला). धन्हें (या'नी ना बालिगान को) वुजू व गुस्ल का हुक्म आदत डालने और आदाब सिपाने के लिये है वरना किसी हदस (या'नी वुजू तोडने वाले अमल) से धन का वुजू नहीं जाता न जिमाअ से धन पर गुस्ल इर्ज हो ❁ भा वुजू ने मां बाप के कपडे या उन के पाने के लिये इल या मस्जिद का इर्श सवाब के लिये धोया पानी मुस्ता'मल न होगा अगर्थे येह अइआल कुरबत (या'नी रिजाअे धलाही) के हें ❁ ना बालिग का पाक हाथ या बदन का कोई जुज अगर्थे बे वुजू हो पानी में डालने से काबिले वुजू रहेगा ❁ बदन सुथरा रभना, मैल दूर करना, शर-अ में मतलूब है के धस्लाम की बिना (या'नी बुन्याद) सुथराई (या'नी पाकीजगी व सफ़ाई) पर है. इस नियत

करमाने मुस्तका : حَسْبُكَ عَلَىٰ عِلْمِهِ وَهُوَ سَلَّمَ : मुज पर दुइद शरीक पढो अल्लाह तुम पर रहमत भेजेगा.

(अनसरी)

से आ वुजू ने बदन धोया तो कुरबत (या'नी कारे सवाब) बेशक है मगर पानी मुस्ता'मल न हुवा ❀ मुस्ता'मल पानी पाक है इस से कपडा धो सकते हैं मगर इस से वुजू नहीं हो सकता और इस का पीना या इस से आटा गूंधना मकड़हे (तन्जीडी) है ❀ पराया पानी बे इजाजत ले गया अगर्ये जबर दस्ती या युरा कर उस से वुजू हो जायेगा मगर हराम है. अलबत्ता किसी के मखूक (या'नी भिखियत के) कूंअं से उस की मुमा-न-अत पर भी पानी भर लिया उस का इस्ति'माल जाइज है ❀ जिस पानी में माअे मुस्ता'मल की धार पड़ोयी या वाजेह कतरे गिरे उस से वुजू न करना बेहतर ❀ जाडे में वुजू करने से सर्दी अहुत मा'लूम होगी इस की तकलीफ होगी मगर किसी मरज का अन्देशा नहीं तो तयम्मूम की इजाजत नहीं ❀ शैतान के थूक और झूंक से नमाज में कतरे और रीह का शुबा हो जाता है, हुकूम है के जब तक अैसा यकीन न हो जिस पर कसम आ सके इस (वस्वसे) पर लिहाज न करे, शैतान कहे के तेरा वुजू जाता रहा तो दिल में जवाब दे ले के अभीस तू जूटा है और अपनी नमाज में मशगूल रहे ❀ मस्जिद को हर दिन की यीज से बयाना वाजिब है अगर्ये पाक हो जैसे लुआबे दहन (मुंह की राल, थूक, बलगम) आबे बीनी (म-सलन रीठ या नाक से नजले का बहने वाला पानी) आबे वुजू ❀ तम्बीह : आ'ज लोग, के वुजू के आ'द अपने मुंह और हाथों से पानी पोंछ कर मस्जिद में हाथ जाडते हैं (येह) महज्ज हाराम और ना जाइज है. ❀ पानी में पेशाब करना मुत्लकन मकड़हे है अगर्ये दरिया में हो ❀ जहां कोई नजासत पडी हो तिलावत मकड़हे है ❀ पानी जाअेअ करना हराम है ❀ माल जाअेअ करना हराम है ❀ जमजम शरीफ से गुस्ल व वुजू बिना कराहत जाइज है (और पेशाब वगैरा कर के) ढेले (से पुशक कर लेने) के आ'द (आबे जमजम से) इस्तिन्जा मकड़हे और

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ: مَوْلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالهِ وَسَلَّمَ: મુઝ પર કસરત સે દુરૂદે પાક પઢો બેશક તુમહારા મુઝ પર દુરૂદે પાક પઢના તુમહારે ગુનાહો કે લિયે મગ્ફિરત હૈ. (મુજમમ)

નજાસત ધોના (મ-સલન પેશાબ કે બા'દ ટિશૂ પેપર વગૈરા સે સુખાએ બિગૈર) ગુનાહ ❁ (વોહ) ઈસરાફ, કે (જો) ના જાઈઝ વ ગુનાહ હૈ (વોહ) સિફ (ઈન) દો સૂરતોં મેં હોતા હૈ, એક યેહ કે કિસી ગુનાહ મેં સફ (યા'ની ખચ) વ ઈસ્તિ'માલ કરેં, દૂસરે બેકાર મહૂઝ માલ ઝાએઝ કરેં ❁ ગુસ્લે મચ્ચિત સિખાને કે લિયે મુર્દે કો નહલાયા ઔર ઉસે ગુસ્લ દેને કી નિચ્ચત ન કી વોહ ભી પાક હો ગયા ઔર ઝિન્દોં પર સે ભી ફર્ઝ ઉતર ગયા કે ફે'લ બિલ કર્ફ કાફી હૈ, હાં બે નિચ્ચત સવાબ ન મિલેગા.

યા રબ્બે મુસ્તફા ﷺ! હમેં ઈસરાફ સે બચતે હુએ શર-ઈ વુઝૂ કે સાથ હર વક્ત બા વુઝૂ રહના નસીબ ફરમા.

أَمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِين صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

ગમે મદીના, બકીઅ, મગ્ફિરત ઔર બે હિસાબ જન્નતુલ ફિરદોસ મેં આકા કે પડોસ કા તાલિબ



15 જુલ હિજ્જતિલ હરામ 1435 સિ.હિ.

01-10-2014

### બા વુઝૂ મરને વાલા શહીદ હૈ

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ: مَوْلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالهِ وَسَلَّمَ અગર

તુમ હમેશા બા વુઝૂ રહને કી ઈસ્તિતાઅત રખો તો એસા હી કરો કયૂંકે મ-લકુલ મૌત જિસ બન્દે કી રૂહ હાલતે વુઝૂ મેં કબ્જ કરતા હૈ ઉસ કે લિયે શહાદત લિખ દી જાતી હૈ. (شُعَبُ الْإِيمَان ج ٣ ص ٢٩٧ حديث ٢٧٨٢)

### યેહ રિસાલા પઢ કર દૂસરે કો દે દીજિયે

શાદી ગમી કી તકરીબાત, ઈજતિમાઆત, આ'રાસ ઔર જુલૂસે મીલાદ વગૈરા મેં મક-ત-બતુલ મદીના કે શાએઝ કર્દા રસાઈલ ઔર મ-દની ફૂલોં પર મુશ્તમિલ પેફ્લેટ તક્સીમ કર કે સવાબ કમાઈયે, ગાહકોં કો બ નિચ્ચતે સવાબ તોહફે મેં દેને કે લિયે અપની દુકાનોં પર ભી રસાઈલ રખને કા મા'મૂલ બનાઈયે, અખ્બાર ફરોશોં યા બચ્ચોં કે ઝરીએ અપને મહલ્લે કે ઘર ઘર મેં માહાના કમ અઝ કમ એક અદદ સુન્નતોં ભરા રિસાલા યા મ-દની ફૂલોં કા પેફ્લેટ પહોંચા કર નેકી કી દા'વત કી ધૂમેં મચાઈયે ઔર ખૂબ સવાબ કમાઈયે.

करमाने मुस्तफ़ی علی اللہ تعالیٰ علیه و آله وسلم : जो मुझे पर एक दुबड़े शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह उसे के लिये एक क़िरात अज्र लिखता है और क़िरात उछुद पछाउ ज़ितना है. (ज़ेज़ज़)

## विलादत में आसानी का नुस्खा (मरयम बीबी का झूल)

मरयम बीबी का झूल<sup>1</sup> दर्टे जेह (अब्ये की विलादत का दर्टे) शुइअ होने पर किसी जुले अरतन या डिब्बे में पानी में डाल दिया जाये तो जैसे जैसे तर होता जायेगा येह खिलता जायेगा और अल्लाहु रब्बुल ईज्जत की ईनायत से मरयम बीबी के झूल की अ-र-कत से अब्ये की विलादत में आसानी होती है.

## बिगैर ओपरेशन विलादत हो गर्ह (मरयम बीबी के झूल का फ़ायेदा)

दा'वते ईस्लामी के ज़ामिअतुल मदीना के अक मुदर्रिस म-दनी ईस्लामी भाई का अयान है के मेरे दूसरे अब्ये की विलादत का दिन था, मेरे अब्यों की अम्मी अस्पताल के मप्सूस कमरे (लेबर रूम) में जा चुकी थीं, कुछ ही देर बाद मुझे म-दनी मुन्ने की विलादत की खुश खबरी मिली. अस्पताल की ईन्तिज़ार ग़ाह में अक शप्स से मुलाक़ात हुई तो उस ने बातों बातों में मरयम बीबी के झूल का ज़िक्र किया तो मेरे दरयाज़त करने पर उस ने बताया के अगर दर्टे जेह (अब्ये की विलादत का दर्टे) शुइअ होने पर इस सूजे झूल को किसी जुले अरतन या डिब्बे में पानी में डाल दिया जाये तो जैसे जैसे तर होता जायेगा येह खिलता जायेगा और इस का फ़ायेदा येह होता है के अब्ये की विलादत में आसानी होती है. फिर कमोबेश दू साल के बाद जब तीसरे अब्ये की विलादत का मरहला आया तो लेडी डॉक्टर ने मेरे अब्यों की अम्मी को

1 : ऐसे "मरयम बूटी" और "मरयम का पन्ज़ा" भी कहते हैं, पन्जे की शकल पुरक डालत में होती है. पन्सारी (देसी दवाओं) की दुकान से मिलना मुश्किन है मक़े मदीने में मक़ामी औरतें और अब्ये ज़मीन पर रख कर थोड़े बेयते हैं और उन के पास भी मिल सकता है, इस की आसिय्यत और अ-र-कत से वाकिफ़ आशिकाने रसूल वहां से तबर्कुन वतन लाते और दूसरों को तोड़फ़तन पेश करते हैं. जिस को दै उस को ईस्ति'माल का तरीका समजाना ज़रूरी है. कम पुराना हो तो ज़ियादा बेहतरे है.

કરમાને મુસ્તફા : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुझ पर दुर्इद पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये ईस्तिफ़ार करते रहेंगे. (अ. १)

એહની તૌર પર ઓપરેશન કે ઝરીએ વિલાદત કે લિયે તય્યાર રહને કા કહા, મુઝે મરયમ બીબી કે ફૂલ કા ખયાલ આયા તો મેં ને પન્સારી (દેસી દવાઓ) કી દુકાન સે મરયમ બૂટી હાસિલ કર લી ઓર જબ વક્તે વિલાદત કરીબ આયા તો ઉસે પાની મેં ડાલ દિયા, અલ્લાહ તઆલા કે કરમ સે બિગૈર ઓપરેશન મ-દની મુન્ની કી વિલાદત હો ગઈ. એક અર્સે બા'દ ચૌથે બચ્ચે પર ભી ડોક્ટર ને ઓપરેશન કન્ફર્મ કર દિયા લેકિન મેં ને દીગર અવરાદો વઝાઈફ (જો મક-ત-બતુલ મદીના કી મત્બૂઆ કિતાબ “ઘરેલૂ ઇલાજ” મેં મૌજૂદ હૈં) કે સાથ સાથ મરયમ બૂટી કા ભી ઇસ્તિ'માલ કિયા, યૂં એક બાર ફિર બિગૈર ઓપરેશન મ-દની મુન્ની કી વિલાદત હો ગઈ. ઇસ કે કમોબેશ દો સાલ બા'દ જબ પાંચવેં બચ્ચે કી વિલાદત મુ-તવક્કઅ થી તો હમ ને અપને ઘર કે કરીબી અસ્પતાલ મેં રુજૂઅ કિયા, વહાં ભી ડોક્ટર ને મેડીકલ રિપોર્ટ્સ ઓર અપને તજરિબે કી રોશની મેં ઓપરેશન કા હી કહા, મેં ને કોશિશ કર કે રકમ કા ભી ઇન્તિઝામ રખા ઓર અવરાદો વઝાઈફ કે સાથ સાથ વક્તે વિલાદત કરીબ હોને પર મરયમ બૂટી ભી ખુલે મુંહ વાલે ડિબ્બે મેં પાની મેં ડાલ દી, ડોક્ટર ને બિગૈર ઓપરેશન વિલાદત કે લિયે કાફી કોશિશ કે બા'દ ઓપરેશન કે લિયે રકમ જમ્મ કરવાને કા બોલા કે અબ ઓપરેશન કે ઇલાવા ચારા નહીં ઓર ઓપરેશન કા ઇન્તિઝામ શુરૂઅ કર દિયા, રકમ બેંક મેં થી મેં અસ્પતાલ કે કરીબી એટીએમ મશીન સે રકમ નિકાલ લાયા ઓર કાઉન્ટર પર જમ્મ કરવા દી, લેકિન ઓપરેશન સે પહલે હી અલ્લાહ جَلَّ وَعَزَّ કી અતા સે તન્દુરુસ્ત વ તુવાના મ-દની મુન્ના પૈદા હોને કી ખુશ ખબરી મિલ ગઈ. મરયમ બૂટી કે ઇસ્તિ'માલ કા મેં ને ચાર યા પાંચ ઇસ્લામી ભાઈયોં કો મશવરા દિયા ઉન મેં સે કઈ એક કો ડોક્ટર ને ઓપરેશન કા બોલ રખા થા, اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ اَنْ تُبْرِئَ لِيْ مِنْ كُلِّ دَاءٍ اَسْئَلُكَ اَنْ تُبْرِئَ لِيْ مِنْ كُلِّ دَاءٍ اَسْئَلُكَ اَنْ تُبْرِئَ لِيْ مِنْ كُلِّ دَاءٍ اَسْئَلُكَ اَنْ تُبْرِئَ لِيْ مِنْ كُلِّ دَاءٍ ઉન કે યહાં ભી બિગૈર ઓપરેશન વિલાદતેં હો ગઈ.

કરમાને મુસ્તફા ﷺ : صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : जिस ने मुज पर अक बार दुरुदे पाक पढा अदवाह उस पर दस रकमतों भेजता है. (मुस्)

## ફેડરિસ

ઉચ્ચાન	અંકસંખ્યા	ઉચ્ચાન	અંકસંખ્યા
દુરુદ શરીફ કી ફઝીલત	1	વુઝૂ કી 14 સુન્નાતેં	12
ઉસ્માને ગની કા ઇશકે રસૂલ	1	વુઝૂ કે 29 મુસ્તહબ્બાત	13
ગુનાહ ઝડને કી હિકાયત	3	વુઝૂ કે 16 મકરૂહાત	15
વુઝૂ કા સવાબ નહીં મિલેગા	4	ધૂપ કે ગર્મ પાની કી વઝાહત	16
સારા બદન પાક હો ગયા !	4	મુસ્તા'મલ પાની કા અહમ મસ્અલા	17
બા વુઝૂ સોને કી ફઝીલત	5	મિટ્ટી મિલે પાની સે વુઝૂ હોગા યા નહીં	17
બા વુઝૂ મરને વાલા શહીદ હૈ	5	પાન ખાને વાલે મુ-તવજજેહ હોં	18
મુસીબતોં સે હિકાઝત કા નુસ્ખા	5	તસવ્વુફ કા અઝીમ મ-દની નુસ્ખા	19
હર વક્ત બા વુઝૂ રહને કે સાત ફઝાઈલ	5	ઝખ્મ વગૈરા સે ખૂન નિકલને કે 5 અહકામ	20
દુગના સવાબ	6	સર્દાં સે આ'ઝા ફટ જાઓં તો.....	21
સર્દાં મેં વુઝૂ કરને કી હિકાયત	6	વુઝૂ મેં મેહંદી ઓર સુરમે કા મસ્અલા	22
વુઝૂ કા તરીકા (હ-નફી)	7	ઈન્જેકશન લગાને સે વુઝૂ ટૂટેગા યા નહીં ?	22
વુઝૂ કે બચે હુએ પાની મેં	9	દુખતી આંખ કે આંસૂ	23
70 બીમારિયોં સે શિકા		પાક ઓર નાપાક રતૂબત	23
જન્નત કે આઠોં દરવાઝે ખુલ જાતે હૈં	10	છાલા ઓર ફુડિયા	23
નઝર કભી કમઝોર ન હો	10	કૈ સે વુઝૂ કબ ટૂટતા હૈ ?	24
વુઝૂ કે બા'દ તીન બાર	11	હંસને કે અહકામ	24
સૂરએ કદ્ર પઢને કે ફઝાઈલ		ક્યા સત્ર દેખને સે વુઝૂ ટૂટ જાતા હૈ ?	25
વુઝૂ કે બા'દ પઢને કી દુઆ	11	ગુસ્લ કા વુઝૂ કાફી હૈ	25
વુઝૂ કે બા'દ યેહ દુઆ ભી પઢ લીજિયે	11	થૂક મેં ખૂન	25
વુઝૂ કે ચાર ફરાઈઝ	12	વુઝૂ મેં શક આને કે 5 અહકામ	26
ધોને કી તા'રીફ	12	સોને સે વુઝૂ ટૂટને ન ટૂટને કા બયાન	26



ફરમાને મુસ્તફા : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : श्री शंभुस मुञ्ज पर दुइडे पाक पढना भूल गया वोड जन्त का रास्ता भूल गया. (गुरान)

વુઝૂએ અભિયાએ કિરામ عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام	28	જારી નહૂર પર ભી ઈસરાફ	37
ઔર નીંદ મુબારક		આ'લા હઝરત કા ફતવા	37
મસાજિદ કે વુઝૂખાને	29	મુફતી અહમદ યાર ખાન કી તફસીર	38
ઘર મેં વુઝૂખાના બનવાઈયે	29	ઈસરાફ ન કર	38
વુઝૂખાના બનવાને કા તરીકા	30	ઈસરાફ શૈતાની કામ હૈ	38
વુઝૂખાને કે 9 મ-દની ફૂલ	31	જન્નત કા સફેદ મહલ માંગના કેસા ?	38
જિન કા વુઝૂ ન રહતા હો ઉન કે લિયે	32	બુરા કિયા, સુલમ કિયા	39
6 અહકામ		ઈસરાફ સિફ દો સૂરતોં મેં હી ગુનાહ હૈ	39
સાત મુ-તફરિકાત	35	અ-મલી તૌર પર વુઝૂ સીખિયે	40
આયત લિખે હુએ કાગઝ કે પિછલે	36	મસ્જિદ ઔર મદ્રસે કે પાની કા ઈસરાફ	41
હિસ્સે કે ઘૂને કા અહમ મસ્અલા		ઈસરાફ સે બચને કી 7 તદાબીર	42
બે વુઝૂ કુરઆને મજહ કો કહીં સે ભી	36	ઈસરાફ સે બચને કે લિયે 14 મ-દની ફૂલ	44
નહીં છૂ સકતા		40 મ-દની ફૂલોં કા ર-ઝવી ગુલદસ્તા	47
વુઝૂ મેં પાની કા ઈસરાફ	36	વિલાદત મેં આસાની કા નુસ્ખા	52

માخذ و مراجع

મطبوعه	کتاب	مطبوعه	کتاب
دارالکتب العلمیة بیروت	کنز العمال	مجمع بحیثی کتبى مركز الاولیاء لاہور	قران مجید
ضیاء القرآن پبلیશنز مرکز الاولیاء لاہور	مراة المساجح	دار احیاء التراث العربی بیروت	نور العرفان
کوئٹہ	البحر الرائق	دارالکتب العلمیة بیروت	سنن ابوداؤد
دارالمعرفت بیروت	در مختار و رد المحتار	دارالمعرفت بیروت	سنن شانی
دارالفکر بیروت	عالمگیری	دارالفکر بیروت	سنن ابن ماجہ
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	مراتی الفلاح	دارالفکر بیروت	مشہد امام احمد
دارالفکر بیروت	الجاوی للفتاوی	دار احیاء التراث العربی بیروت	مجمع کبیر
دارالکتب العلمیة بیروت	میزان الکبری	دارالکتب العلمیة بیروت	مجمع اوسط
دارصادر بیروت	احیاء العلوم	دارالکتب العلمیة بیروت	مجمع صغیر
روی پبلیکیشنز مرکز الاولیاء لاہور	مسائل القرآن	مکتبۃ العلوم و الکلمہ مدینہ منورہ	مشہد بزار
رضاقادری پبلیشنگ مرکز الاولیاء لاہور	فتاوی رضویہ	باب المدینہ کراچی	سنن داری
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	بہار شریعت	مدینۃ الاولیاء ملتان	سنن دارقطنی
☆☆☆☆☆	☆☆☆☆☆	دارالکتب العلمیة بیروت	شعب الایمان

# ❦ વુઘૂખાને અઠાર ❦

## ઊપર સે વુઘૂખાને કા નકશા



## ❦ સીધી તરફ સે વુઘૂખાને કા નકશા



મક-ત-બતુલ મદીના

દાવટે ઈસ્લામી



ફૂઝાને મદીના, ત્રી ડોનિયા બગીચે કે સામને, મિરઝાપૂર, અહમદાબાદ-1. ગુજરાત, ઈન્ડિયા  
 Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net